श्रावण शुक्ल - 9 ■ संवत 2081 ■ वर्ष - 12 ■ अंक - 22 ■ पृष्ठ - 8 ■ रु. 5/- चेन्नई » बुधवार » 14-08-2024 ■ www.dakshinbharat.com ■ Email : chennai@dakshinbharat.com

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

தக்ஷின் பாரத் ராஷ்ட்ரமத் | தினசரி ஹிந்தி நாளிதழ் | चेन्नई और बेंगलूरु से एक साथ प्रकाशित

5 बंगाल ऐसा प्रदेश बन गया है जहां कानून व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रह गई : नड्डा

6 देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करता 'हर घर तिरंगा'

7 मेरी असली ताकत एक्टिंग में नहीं, बल्कि कहानियां कहने में है : सलीम खान

फर्स्ट टेक

बांग्लादेश में भारतीय वीज़ा सेवाएं पुनः शुरू

ढाका/एजेन्सी। बांग्लादेश में हालिया राजनीतिक उथलपुथल के बीच राजधानी ढाका स्थित भारतीय वीज़ा आवेदन केंद्र (आईवीएसी) ने वीजा सेवाएं मंगलवार से फिर से शुरू कर दी। 'ढाका ट्रिब्यून' के अनुसार आईवीएसी ने एक प्रेस विज्ञप्ति में प्रत्येक दिन कुछ घंटों के लिए काम फिर से शुरू करने की जानकारी दी। चूंकि इसके लिए समय सीमित होगा, इसलिए आवेदकों से अपने पासपोर्ट के संग्रह के लिए एसएमएस सूचना प्राप्त करने के बाद ही वीज़ा केंद्र पर पहुंचने का आग्रह किया गया है।

आबकारी 'घोटाला' : केजरीवाल, के कविता की न्यायिक हिरासत दो सितंबर तक बढ़ी

नई दिल्ली/भाषा। यहां की एक अदालत ने कथित आबकारी घोटाले से संबंधित धन शोधन के एक मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, बीआरएस नेता के. कविता और अन्य की न्यायिक हिरासत मंगलवार को दो सितंबर तक बढ़ा दी। विशेष न्यायाधीश कावेरी बावेजा ने आरोपियों की न्यायिक हिरासत अवधि समाप्त होने पर उन्हें वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए अदालत के समक्ष पेश किए जाने के बाद उनकी हिरासत अवधि बढ़ा दी। उच्चतम न्यायालय ने पहले इस मामले में केजरीवाल को अंतरिम जमानत दे दी थी। हालांकि, आम आदमी पार्टी (आप) के नेता अब भी तिहाड़ जेल में बंद हैं, क्योंकि उन्होंने मामले में जमानत बॉण्ड नहीं भरा है।

पाकिस्तान की अदालत ने बुशरा बीबी की जमानत याचिका खारिज की

इस्लामाबाद/भाषा। पाकिस्तान की एक आतंकवाद निरोधक अदालत ने पिछले साल नौ मई को हुई हिंसा से संबंधित 12 मामलों में जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पत्नी बुशरा बीबी की जमानत याचिका खारिज कर दी है। हिंसा तब भड़की थी, जब पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के संस्थापक खान को कथित भ्रष्टाचार के मामले में गिरफ्तार किया गया था। आतंकवाद निरोधक अदालत (एटीसी) रावलपिंडी के न्यायाधीश मलिक एजाज आसिफ ने सोमवार को 49 वर्षीय बुशरा बीबी की याचिका पर सुनवाई के बाद कहा कि उनके मामले में गहन जांच की आवश्यकता है और इसके बाद उन्होंने जमानत याचिका खारिज कर दी। न्यायाधीश ने यह आदेश भी दिया कि उनके मामले की जांच सात दिन में पूरी की जाए। बीबी रावलपिंडी के विभिन्न पुलिस थानों में दर्ज प्राथमिकियों के संबंध में जमानत मांग रही थीं।

देशभर के रेजिडेंट डॉक्टरों की अनिश्चितकालीन हड़ताल जारी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोलकाता उच्च न्यायालय ने पूरे मामले की जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो से कराने की आदेश दिये

नई दिल्ली/एजेन्सी। पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता के एक अस्पताल में एक महिला रेजिडेंट डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और उसकी हत्या के विरोध में देशभर के सरकारी अस्पतालों के रेजिडेंट डॉक्टर अनिश्चितकालीन हड़ताल दूसरे दिन मंगलवार को भी जारी रही।

हड़ताल का आयोजन फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया रेजिडेंट डॉक्टर एसोसिएशन ने किया है। डॉक्टरों के संगठनों ने केंद्र सरकार के मंत्रालयों को पत्र लिखकर आरोपी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है और अस्पतालों में सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने को कहा है। डॉक्टरों ने सोमवार से अनिश्चितकालीन हड़ताल की घोषणा की है। रेजिडेंट डॉक्टर दुष्कर्म और हत्या के आरोपी को कड़ी सजा देने की मांग कर रहे हैं। महिला डॉक्टर की हत्या के खिलाफ देशभर के डॉक्टर हडताल पर है। हालांकि अस्पतालों में आपात सेवाओं को बहाल रखा गया है।

इस बीच कोलकाता उच्च न्यायालय ने पूरे मामले की जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो से कराने की आदेश दिये हैं। कोलकाता के संबंधित अस्पताल के प्रमुख ने त्यागपत्र दे दिया है। चिकित्सकों की सुरक्षा को लेकर महासंघ ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखा है और मृतक डॉक्टर के लिए शीघ्र न्याय और देश भर में सभी स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारियों के लिए सुरक्षा मानकों को सख्ती से लागू करने की मांग की हैं। अख़िल भारतीय महिला कांग्रेस ने डॉक्टरों की शांतिपूर्ण हड़ताल और माँगों का पूरी तरह से समर्थन किया है।

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आइएमए) ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को पत्र लिखकर देशभर के अस्पतालों में डॉक्टरों के लिए सुरक्षित माहौल उपलब्ध कराने की सिफारिश की है। इसके अलावा डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए सख्त कानून बनाने की मांग की है।

दिल्ली में लगातार दूसरे दिन भी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, सफदरजंग, राम मनोहर लोहिया लोकनायक जयप्रकाश और जीबी पंत सहित सभी बड़े अस्पतालों में रेजिडेंट डॉक्टर हड़ताल पर रहे। इस कारण से ओपीडी और नियमित सर्जरी प्रभावित रही।

'कुछ लोग भारत के तेजी से होते विकास को पचा नहीं पा रहे'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। अमेरिकी शोध एवं निवेश कंपनी हिंडनबर्ग के आरोपों की जेपीसी (संयुक्त संसदीय समिति) जांच की मांग को लेकर विपक्ष पर निशाना साधते हुए उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने मंगलवार को कहा कि भारत ''बेहद तेज गति'' से विकास कर रहा है, लेकिन कुछ लोग ''अस्थिरता लाना'' चाहते हैं।

उपराष्ट्रपति की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब विपक्ष ने भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड (सेबी) की अध्यक्ष माधवी बुच के खिलाफ हिंडनबर्ग के आरोपों को लेकर सरकार पर हमला तेज कर दिया है। कांग्रेस ने चेतावनी दी है कि अगर जेपीसी जांच शुरू नहीं की गई तो देशव्यापी आंदोलन होगा।

भाजपा ने इस मांग को भारतीय अर्थव्यवस्था को कमजोर करने के उद्देश्य से किया गया एक ''ढकोसला'' करार दिया है।

'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत भारत मंडपम से 'तिरंगा बाइक रैली' को हरी झंडी दिखाए जाने के मौके पर धनखड़ ने अपने संबोधन में कहा, साथियों, हमारे देश का विकास बेहद तेज गति से हो रहा है। कुछ लोग इसे पचा नहीं पा रहे हैं, वे अवरोध उत्पन्न करना और अस्थिरता लाना चाहते हैं। उन्होंने कहा, वे सोचते हैं कि अगर भारत इसी तरह आगे बढ़ता रहा तो निश्चित रूप से विश्व गुरु बन जाएगा। जो लोग अवरोध पैदा करते हैं, कहीं से कुछ भी बात उठ जाए उसको प्रामाणिक मानते हैं...।

उपराष्ट्रपति ने कहा, मैं देश को सावधान करना चाहता हूं, मैं नागरिकों से आग्रह करता हूं कि वे ऐसी ताकतों, देश विरोधी ताकतों, खतरनाक मकसद वालों से बेहद सतर्क रहें। उनका एकमात्र उद्देश्य भारत को अस्थिर करना है, ताकि हमारी प्रगति बाधित हो।

धनखड़ ने कहा कि 'हर घर तिरंगा' अभियान 'विकसित भारत' के प्रति देश की प्रतिबद्धता को दर्शाता है और दिखाता है कि यह सदी ''भारत की सदी'' है।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि उनके मन में कोई संदेह नहीं है कि आज प्रत्येक भारतीय देश विरोधी ताकतों को परास्त करने का संकल्प लेंगे।

'आप' सांसद संजय सिंह व सपा नेता अनूप संडा के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी

सुलतानपुर (उप्र)/भाषा। सुलतानपुर में स्थानीय सांसद/विधायक अदालत ने दो दशक से अधिक पुराने एक मामले में आम आदमी पार्टी (आप) के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सदस्य संजय सिंह तथा समाजवादी पार्टी (सपा) के पूर्व विधायक अनूप संडा समेत छह दोषियों के खिलाफ मंगलवार को गैर जमानती वारंट जारी किया। संजय सिंह के अधिवक्ता मदन प्रताप सिंह ने बताया कि सांसद/विधायक अदालत के विशेष न्यायाधीश शुभम वर्मा ने 23 वर्ष पुराने मामले में संजय सिंह और अनूप संडा समेत सभी छह आरोपियों के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किए और मामले की अगली सुनवाई के लिए 20 अगस्त की तारीख मुकर्रर की। अभियोजन पक्ष के अनुसार, करीब 23 साल पहले बिजली, पानी समेत अन्य जनसमस्याओं को लेकर सड़क जाम कर प्रदर्शन करने के मामले में एक विशेष अदालत ने 11 जनवरी 2023 को सभी आरोपियों को दोषी करार देते हुए उन्हें तीन-तीन माह के कारावास की सज़ा सुनाई थी और उनपर डेढ़-डेढ़ हजार रुपये का जुर्माना लगाया था।

गरीबों और मध्यम वर्ग के साथ विश्वासघात किया गया, जनता के बीच जाएंगे : खरगे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने बेरोजगारी, महंगाई और ''संविधान पर हमले'' को लेकर मंगलवार को केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार पर निशाना साधा और उस पर देश के गरीबो एवं मध्य वर्ग के साथ विश्वासघात करने का आरोप लगाया। खरगे ने यह भी कहा कि कांग्रेस प्रमुख मुद्दों को लेकर अभियान शुरू करेगी और जनता के बीच जाएगी।

कांग्रेस महासचिवों, राज्य प्रभारियों और प्रदेश इकाई के प्रमुखों के साथ बैठक के बाद खरगे ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, हमने चुनावी तैयारियों के लिए संगठनात्मक मामलों और राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एआईसीसी महासचिवों, प्रभारियों और प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्षों की एक बैठक बुलाई। उन्होंने कहा, सेबी और अदाणी के बीच सांठगांठ के चौंकाने वाले खुलासे की गहन जांच की जरूरत है। शेयर बाजार में छोटे निवेशकों का पैसा खतरे में नहीं डाला जा सकता। मोदी सरकार को तुरंत सेबी अध्यक्ष का इस्तीफा मांगना चाहिए और इस संबंध में जेपीसी (संयुक्त संसदीय समिति) का गठन करना चाहिए।

कांग्रेस प्रमुख ने भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड (सेबी) की प्रमुख माधवी बुच के खिलाफ हिंडनबर्ग रिसर्च के आरोपों की पृष्ठभूमि में यह बात कही।

कांग्रेस अध्यक्ष ने दावा किया कि बेलगाम बेरोजगारी और अनियंत्रित मुद्रास्फीति तथा घरेलू बचत में कमी जैसे गंभीर मुद्दों पर पार्टी ने ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने दावा किया कि सरकार ने गरीबों और मध्यम वर्ग के साथ विश्वासघात किया है। खरगे ने आरोप लगाया कि संविधान पर हमला लगातार जारी है। उन्होंने साथ ही कहा, जातीय जनगणना लोगों की मांग है। खरगे ने कहा, कांग्रेस पार्टी हमारे किसानों के लिए एमएसपी की कानूनी गारंटी की मांग को लेकर अपनी लड़ाई जारी रखेगी। हमारे देशभक्त युवाओं पर थोपी गई अग्निपथ योजना को ख़त्म किया जाना चाहिए। उन्होंने रेल सुरक्षा का मुद्दा उठाते हुए कहा, ट्रेनों का पटरी से उतरना आम बात हो गई है, जिससे करोड़ों यात्रियों को परेशानी होती है।

खेल पंचाट ने विनेश फोगाट की अपील पर फैसला 16 तक टाला

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

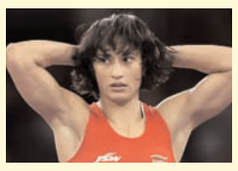

पेरिस/भाषा। खेल पंचाट (कैस) के तदर्थ प्रभाग ने मंगलवार को विनेश फोगाट की पेरिस ओलंपिक में फाइनल से पहले अयोग्य ठहराए जाने के खिलाफ अपील पर फैसला बिना कोई कारण दिये फिर 16 अगस्त तक स्थगित कर दिया जिससे इस भारतीय पहलवान के भाग्य पर संदेह बरकरार है।

खेल पंचाट को सभी पक्षों की दलीलें सुनने के बाद मंगलवार को फैसला सुनाना था लेकिन इसे बिना कोई कारण बताये फिर तीसरी बार टाल दिया गया। इससे 29 वर्षीय भारतीय पहलवान का इंतजार बढ़ गया है।

भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की विज्ञप्ति के अनुसार, ''खेल पंचाट के तदर्थ प्रभाग के अध्यक्ष ने विनेश फोगाट बनाम यूनाईटेड विश्व कुश्ती (यूडब्ल्यूडब्ल्यू) और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति मामले में एकमात्र मध्यस्थ डॉ. एनाबेले बेनेट को अपना फैसला सुनाने के लिए शुक्रवार 16 अगस्त 2024 पेरिस समय के अनुसार शाम छह बजे (भारतीय समयानुसार रात साढ़े नौ बजे) तक अनुमति दी है। ''

रूस के कुर्स्क क्षेत्र के अंदर तक पहुंची यूक्रेनी सेना

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कीव/एजेन्सी। यूक्रेन की सेना रूस के कुर्स्क क्षेत्र में 30 किलोमीटर अंदर तक पहुंच गयी है।

रूस के रक्षा मंत्रालय ने रविवार को कहा था कि उसके बलों ने बख्तरबंद वाहनों के साथ दुश्मन के समूहों द्वारा रूसी क्षेत्र में घुसने के प्रयासों को विफल कर दिया।

रूसी रक्षा मंत्रालय ने टोलपिनो और ओब्शची कोलोडेज के गांवों के पास यूक्रेनी सैनिकों से झड़प की जानकारी दी, जो रूस-यूक्रेन सीमा से लगभग 25 किमी और 30 किमी दूर हैं।

बीबीसी रिपोर्ट के अनुसार एक वीडियो में दिखाया गया कि यूक्रेनी सेना ने सीमा से लगभग 25 किमी दूर रूस के लेवशिंका गांव तक अपने पैर जमा लिये हैं। यूक्रेनी सेना ने कहा है कि उसने कुर्स्क क्षेत्र में कई समुदायों पर कब्ज़ा कर लिया है।

रिपोर्ट के मुताबिक, यूक्रेनी सेना ने रूस के एक गांव गुएवो में एक प्रशासनिक सुविधा से रूसी झंडा हटाते हुए वीडियो रिकॉर्ड किया है। इसके अलावा, उनको वीडियो में स्वेर्दलिकोवो और पोरोज में प्रशासनिक सुविधाओं पर कब्ज़ा करते हुये भी दिखाया गया है जबकि लगभग पांच हजार की आबादी वाले सुदज़ा गांव में दोनों देशों की सेनाओं की बीच संघर्ष की खबर है।

रूस के अनुसार, अधिकारियों के आपातकाल की स्थिति की घोषणा करने के बाद कुर्स्क क्षेत्र के सीमावर्ती इलाकों से 76 हजार लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया है।

कार्यवाहक क्षेत्रीय गवर्नर अलेक्सी स्मिरनोव ने बताया कि शनिवार देर रात क्षेत्रीय सीट कुर्स्क में एक बहुमंजिला इमारत पर यूक्रेनी मिसाइल गिरने से 15 लोग घायल हो गये। यूक्रेन के सांसद ओलेक्सी गोंचारेंको ने इस अभियान की प्रशंसा करते हुए कहा, यह हमें 100 शांति शिखर सम्मेलनों की तुलना में शांति के बहुत करीब ले जाता है।

बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया गया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

ढाका/भाषा। बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना और छह अन्य के खिलाफ पिछले महीने हुईं हिंसक झड़पों के दौरान किराने की एक दुकान के मालिक की मौत को लेकर हत्या का मामला दर्ज किया गया है। मंगलवार को मीडिया की खबरों में यह जानकारी सामने आई है।

नौकरी में आरक्षण की विवादास्पद व्यवस्था को लेकर अपनी अवामी लीग नीत सरकार के खिलाफ व्यापक विरोध प्रदर्शन के बाद पिछले सप्ताह इस्तीफा देकर भारत भाग गईं हसीना (76) के खिलाफ दर्ज किया गया यह पहला मामला है।

ढाका ट्रिब्यून अखबार की खबर के मुताबिक, यह मामला किराने की दुकान के मालिक अबू सईद के शुभचिंतक ने दर्ज कराया है, जिनकी मोहम्मदपुर में आरक्षण आंदोलन के समर्थन में 19 जुलाई को निकाले गए जुलूस के दौरान पुलिस की गोलीबारी में मौत हो गई थी। अन्य आरोपियों में अवामी लीग के महासचिव ओबैदुल कादर, पूर्व गृह मंत्री असदुज्जमां खान कमाल और पूर्व पुलिस महानिरीक्षक चौधरी अब्दुल्ला अल मामून शामिल हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, इनके अलावा, कई उच्च पदस्थ पुलिस अधिकारियों और सरकारी अधिकारियों को भी मामले में आरोपी बनाया गया है।

बांग्लादेश में पांच अगस्त को हसीना सरकार के गिरने के बाद देशभर में भड़की हिंसा की घटनाओं में 230 से अधिक लोग मारे गए है। जुलाई के मध्य में पहली बार कोटा विरोधी प्रदर्शन शुरू होने के बाद से इस हिंसा में मरने वालों की कुल संख्या 560 हो गई है।

शेख हसीना ने 'न्याय' की मांग की

ढाका/नई दिल्ली/भाषा। बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना ने न्याय की मांग करते हुए मंगलवार को कहा कि हाल के ''आतंकवादी कृत्यों'', हत्याओं और तोड़फोड़ में शामिल लोगों की जांच कर उनकी पहचान की जानी चाहिए तथा उन्हें दंडित किया जाना चाहिए।

पांच अगस्त को पद से हटने के बाद अपने पहले सार्वजनिक बयान में हसीना (76) ने कहा कि आंदोलन के नाम पर जुलाई से जारी हिंसा में कई लोगों की मौत हो गई है। हसीना इस समय नई दिल्ली में हैं। अमेरिका में रह रहे उनके बेटे साजिब वाजेद ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर अपने हैंडल पर हसीना का बयान पोस्ट किया जो बांग्ला भाषा में है।

बयान में हसीना ने कहा, मैं छात्रों, शिक्षकों, पुलिस कर्मियों, गर्भवती महिलाओं, पत्रकारों, सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं, कामकाजी लोगों, अवामी लीग और उसके सहयोगी संगठनों के नेताओं और कार्यकर्ताओं, पैदल चलने वालों और कई प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों की मौत पर दुख व्यक्त करती हूं।

हसीना ने 15 अगस्त, 1975 को अपने परिवार के सदस्यों की नृशंस हत्या का जिक्र करते हुए कहा, मुझे अपने जैसे उन लोगों के प्रति सहानुभूति है, जो अपने प्रियजनों को खोने के दुख के साथ जी रहे हैं। मैं इन हत्याओं और आतंकवादी कृत्यों में शामिल लोगों की पहचान कर और उन्हें सजा देने के लिए उचित जांच की मांग करती हूं।

बांग्लादेश में मुद्रास्फीति जुलाई में 12 साल के उच्चतम स्तर पर

ढाका/भाषा। हाल ही में भारी राजनीतिक उथल-पुथल का सामना करने वाले बांग्लादेश में खुदरा मुद्रास्फीति जुलाई के महीने में 12 साल के उच्चस्तर 11.66 प्रतिशत पर पहुंच गई।

स्थानीय समाचारपत्र 'द ढाका ट्रिब्यून' ने बांग्लादेश सांख्यिकी ब्यूरो की तरफ से जारी आंकड़ों के हवाले से कहा कि जुलाई में खाद्य वस्तुओं की महंगाई से खुदरा मुद्रास्फीति 12 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। खुदरा मुद्रास्फीति का पिछला उच्चस्तर मई में 9.94 प्रतिशत रहा था। पिछले महीने खाद्य मुद्रास्फीति 14.10 प्रतिशत के रिकॉर्ड स्तर पर रही जबकि गैर-खाद्य मुद्रास्फीति 9.68 प्रतिशत रही। इसके पहले जून के महीने में ये दोनों क्रमशः 10.42 प्रतिशत और 9.15 प्रतिशत रही थीं। जुलाई के महीने में देशव्यापी छात्र आंदोलन की वजह से आर्थिक गतिविधियां प्रभावित हुई थीं। इस दौरान कई दिनों तक कर्फ्यू लगा और इंटरनेट को भी बंद कर दिया गया था।

13-08-2024 सूर्यास्त 6:30 बजे | 14-08-2024 सूर्योदय 5:56 बजे

BSE	NSE
79,648.92	24,347.00
(-56.98)	(-20.50)

सोना	चांदी
7,224 रु.	88,000 रु.
(24 कैरेट) प्रति ग्राम	प्रति किलो

मिशन मंडेला
दक्षिण भारत राष्ट्रमत
दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक
epaper.dakshinbharat.com

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

बरसे मेघा

उमड़ घुमड़ कर बरसे मेघा,
चहुं दिश धूम मचाए।
लगे उबकने ताल तलैया,
जन-जन मंगल गाए।
सावन की रिमझिम-रिमझिम से,
कानन भी हर्षाए।
दादुर मोर पपीहा बोले,
अब अच्छे दिन आए।।

देश की कराधान व्यवस्था उचित, चुनौतियों से निपटने को धन की जरूरत : सीतारमण

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भोपाल/भाषा। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को मौजूदा कराधान व्यवस्था को उचित ठहराते हुए कहा कि देश को चुनौतियों का सामना करने और अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के लिए धन की जरूरत है।

सीतारमण भोपाल में भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर) के 11वें दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रही थीं। वैज्ञानिक समुदाय से अक्षय ऊर्जा के भंडारण पर अधिक शोध करने की अपील करते हुए सीतारमण ने कहा कि दुनिया ने जीवाश्म ईंधन से अक्षय ऊर्जा में बदलाव के लिए बहुत सारा धन देने का वादा किया है, लेकिन यह आना अभी बाकी है।

वित्त मंत्री ने कहा, लेकिन भारत ने इंतजार नहीं किया। पेरिस (पेरिस समझौते) में किए गए वादे हमारे अपने पैसे से पूरे किए गए। कई बार वित्त मंत्री होने के नाते मुझे लोगों को यह जवाब देना पड़ता है कि हमारे कर ऐसे क्यों हैं? हम इससे भी कम क्यों नहीं कर सकते? मेरी इच्छा है कि मैं इसे लगभग शून्य पर ला सकूं। लेकिन भारत की चुनौतियां गंभीर हैं और

इनसे पार पाना होगा। उन्होंने कहा कि सरकार ने वैज्ञानिक अनुसंधान में भारी निवेश किया है। उन्होंने कहा, मैं चाहती हूं कि मेरे सामने स्नातक, पीएचडी धारक बहुत विद्वान लोग हों जो भारत की चुनौतियों को समझें। मैं भारत जैसे विकासशील देश के लिए ऊर्जा के उन स्थायी स्रोतों में से एक के रूप में नवीकरणीय ऊर्जा का उदाहरण लेती हूं।

वैज्ञानिकों से नवाचारों के साथ आने का आग्रह करते हुए उन्होंने कहा कि भारत अपनी ताकत से जीवाश्म ईंधन से नवीकरणीय ऊर्जा की ओर बढ़ रहा है क्योंकि देश कहीं और से पैसे का इंतजार नहीं कर सकता।

सीतारमण ने वैज्ञानिकों से नवीकरणीय ऊर्जा के भंडारण के लिए बैटरी विकसित करने का भी आग्रह किया क्योंकि जीवाश्म ईंधन से नवीकरणीय ऊर्जा में बदलाव टिकाऊ होना चाहिए। वित्त मंत्री ने उपस्थित लोगों से यह सवाल पूछते हुए कि क्या शोध के लिए और अधिक धन होना चाहिए?

कहा, सरकार सिर्फ बातें नहीं कर रही है। वह अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) में पैसा लगा रही है...कर से अर्जित धन। यह मेरा काम है। मेरा काम राजस्व उत्पन्न करना है, लोगों को परेशान करना नहीं है। हमें अनुसंधान के लिए धन की आवश्यकता है।

दीक्षांत समारोह के दौरान मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव, भोपाल के लोकसभा सांसद आलोक शर्मा और अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

मारुति की एसयूवी के जापान को निर्यात से 'ब्रांड इंडिया' की छवि मजबूत: गोयल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार को कहा कि वाहन विनिर्माता मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) के एसयूवी मॉडल फ्रॉन्क्स का जापान को निर्यात शुरू होने से वैश्विक मंच पर 'ब्रांड इंडिया' की छवि और मजबूत हुई है। देश की सबसे बड़ी कार कंपनी मारुति सुजुकी ने बयान में कहा कि फ्रॉन्क्स मॉडल की 1,600 से अधिक इकाइयों की पहली खेप गुजरात के पीपावाव बंदरगाह से जापान के लिए रवाना हुई है।

फ्रॉन्क्स मारुति सुजुकी की जापान में पेश की जाने वाली पहली एसयूवी होगी। कंपनी इस मॉडल को खास तौर पर अपने गुजरात संयंत्र में ही तैयार करती है। गोयल ने इस बारे में सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट में कहा, समय बदल रहा है। यह वास्तव में गर्व का क्षण है क्योंकि मारुति सुजुकी की 1,600 से अधिक 'मेड इन इंडिया' एसयूवी की खेप पहली बार जापान को निर्यात की गई है। उन्होंने कहा कि नरेन्द्र मोदी सरकार ने पिछले एक दशक में घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए कई नीतियों को लागू किया है। उन्होंने कहा, स्थानीय स्तर पर विश्वस्तरीय गुणवत्ता वाले उत्पादों के उत्पादन पर जोर देने से 'ब्रांड इंडिया' को वैश्विक स्तर पर एक नाम बनने में मदद मिली है। वर्ष 2016 में बलेनो के बाद फ्रॉन्क्स मारुति सुजुकी का दूसरा मॉडल है जिसे जापान को निर्यात किया जा रहा है।

सोमैया के खिलाफ आईएनएस विक्रांत मामले में अदालत ने आगे जांच की जरूरत बताई

मुंबई/भाषा। मुंबई की एक अदालत ने भाजपा नेता किरीट सोमैया और उनके बेटे के खिलाफ धोखाधड़ी के एक मामले को बंद करने से इनकार करते हुए कहा कि मामले में आगे जांच जरूरी है क्योंकि पुलिस ने इस बात की जांच नहीं की है कि नौसेना के विमानवाहक पोत 'विक्रांत' को बचाने के लिए उनके द्वारा एकत्र किए गए धन का क्या किया गया। मजिस्ट्रेट अदालत ने आठ अगस्त को मुंबई पुलिस के आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ (ईओडब्ल्यू) द्वारा जमा की गई 'क्लोजर रिपोर्ट' को स्वीकार नहीं किया था।

अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (एस्प्लेनेड अदालत) एस पी शिंदे ने पुलिस को निर्देश दिया था कि मामले में आगे और जांच की जाए क्योंकि यह जरूरी है तथा रिपोर्ट जमा की जाए। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि जांच से पता चला है कि आरोपियों ने धन एकत्र किया था लेकिन पुलिस ने रिकॉर्ड पर ऐसा कोई दस्तावेज पेश नहीं किया है जिससे पता चले कि उक्त राशि आरोपियों ने महाराष्ट्र के राज्यपाल के कार्यालय या सरकार को जमा की थी। अदालत ने कहा, इस मामले में जांच अधिकारी ने यह जांच नहीं की है कि आरोपी ने जमा राशि के साथ क्या किया। उसने कहा, मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर विचार करने के बाद लगता है कि मामले में आगे जांच जरूरी है। इसलिए, जांच अधिकारी को निर्देश दिया जाता है कि आगे जांच करें और रिपोर्ट जमा करें।

दिल्ली के उपराज्यपाल, परिवहन मंत्री ने इलेक्ट्रिक बस के बहुमंजिली डिपो की आधारशिला रखी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना और परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने मंगलवार को दक्षिणी दिल्ली के वसंत विहार इलाके में इलेक्ट्रिक बस के बहुमंजिला डिपो की आधारशिला रखी।

अधिकारियों का दावा है कि यह भारत का सबसे बड़ा बस डिपो होगा। उन्होंने बताया कि यह डिपो 7.6 लाख वर्ग फुट क्षेत्र में बनेगा और इसकी अनुमानित लागत 409 करोड़ रुपए होगी।

गहलोत ने आधारशिला रखने के बाद एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा, यह बस डिपो भारत की सबसे बड़ी और पहली इलेक्ट्रिक बस-पार्किंग सुविधा होगी। इसे भविष्य में मील के पत्थर के रूप में देखा जाएगा। उन्होंने कहा कि इस बस डिपो में 220 कारों और 200 दोपहिया वाहनों की पार्किंग के लिए भी समर्पित स्थान होगा।

इस इलेक्ट्रिक बस डिपो का निर्माण राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम (एनबीसीसी) द्वारा किया जाएगा और इसके अगले दो वर्षों में पूरा होने की उम्मीद है।

गहलोत ने कहा, इसमें 434 बस खड़ी की जा सकेंगी और इसमें इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन, छत पर सोलर पैनल और मरम्मत कार्य के लिए 16 पिट होंगे। उन्होंने कहा, यह बस डिपो शून्य-निर्वहन सुविधा वाला होगा, जिसका अर्थ है कि इसमें कोई अपशिष्ट उत्पन्न नहीं होगा क्योंकि पार्किंग में एक जल उपचार संयंत्र स्थापित किया जाएगा जो अपशिष्ट जल को शोधित करने में मदद करेगा जिसका उपयोग बसों की सफाई के लिए किया जा सकता है।

परिवहन मंत्री ने कहा कि बस डिपो की बिजली आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए छत पर 112 मेगावाट क्षमता के सौर पैनल लगाए जाएंगे, जिससे यह परियोजना पर्यावरण के अनुकूल और कुशल बन जाएगी।

'एक भारत-एक टिकट' पहल को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करेंगे रेलवे और एनसीआरटीसी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। भारतीय रेलवे और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने 'एक भारत-एक टिकट' पहल को बढ़ावा देने के लिए साझेदारी की है जिससे रेलवे और नमो भारत ट्रेन में सफर करने वाले यात्रियों के लिए टिकट खरीदने का अनुभव बेहतर होगा। एक बयान में यह जानकारी दी। इस साझेदारी का उद्देश्य यात्रियों को ऐसी प्रणाली प्रदान करना है जिससे यात्री भारतीय रेलवे और रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) सेवाओं के लिए एक ही मंच से आसानी से टिकट प्राप्त कर पाएं।

भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) से ट्रेन की ई-टिकट बुक करने के बाद उपयोगकर्ता अब अतिरिक्त सेवा के रूप में प्रति बुकिंग पर अधिकतम आठ यात्रियों के लिए नमो भारत ट्रेन की टिकट बुक करने का विकल्प भी चुन सकते हैं। बयान में कहा गया कि नमो भारत ट्रेन टिकट को बुक करने का विकल्प पीएनआर (पैसेंजर नेम रिकॉर्ड) कंफर्मेशन पेज पर प्रदर्शित होगा और उपयोगकर्ता के ट्रेन टिकट बुकिंग के रिकॉर्ड से भी यह विकल्प दिखाई देगा। प्रत्येक नमो भारत ट्रेन टिकट के लिए एक क्यूआर कोड जारी किया जाएगा और उसे इलेक्ट्रॉनिक रिजर्वेशन स्लिप (ईआरएस) पर आसानी से मुद्रित किया जा सकेगा।

नमो भारत ट्रेन टिकट के लिए जारी क्यूआर कोड ट्रेन यात्रा की तिथि के चार दिन की अवधि के लिए वैध होंगे जिसके तहत यह टिकट नमो भारत ट्रेन यात्रा की तिथि से एक दिन पहले, यात्रा तिथि से तथा यात्रा तिथि के दो दिन बाद तक वैध होगा।

बयान में कहा गया कि ट्रेन टिकट पर प्रत्येक यात्री को एक क्यूआर कोड के साथ खुद का नमो भारत ट्रेन टिकट मिलेगा। एक ट्रेन टिकट पर बुक किए नमो भारत ट्रेन के सभी टिकट का आरंभिक स्टेशन और गंतव्य स्टेशन एक ही होने चाहिए। बयान में कहा गया कि नमो भारत ट्रेन टिकट की प्रणाली को रेलवे की मौजूदा अग्रिम आरक्षण अवधि (एआरपी) प्रणाली के साथ ही जोड़ा गया है जिससे कि 120 दिन पहले तक टिकट बुक किए जा सकते हैं। नमो भारत ट्रेन की टिकट बुकिंग प्रक्रिया पूरी होने पर उपयोगकर्ताओं को मोबाइल पर संदेश और ईमेल के माध्यम से पुष्टि की जाएगी, जिसमें पंजीकृत मोबाइल नंबर और ईमेल पर नमो भारत ट्रेन का क्यूआर कोड विवरण भेजा जाएगा। आईआरसीटीसी से नमो भारत ट्रेन टिकट लेने पर किराये में सुविधा शुल्क (पांच रुपए और कर) जोड़ा जाएगा। इसके अलावा टिकट खरीदने के लिए आईआरसीटीसी मंच पर उपलब्ध ऑनलाइन भुगतान माध्यम का उपयोग भी कर सकेंगे।

अगर उपयोगकर्ता टिकट रद्द करवाता है तो उसे नमो भारत ट्रेन का पूरा किराया वापस कर दिया जाएगा लेकिन आईआरसीटीसी सुविधा शुल्क, भुगतान शुल्क और संबंधित कर वापस नहीं होगा।

मैं न तो 'टायर्ड, न 'रिटायर्ड, मुख्यमंत्री का फैसला आलाकमान करेगा : हुड्डा

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने हरियाणा विधानसभा में मुख्यमंत्री पद के चेहरे से जुड़े सवाल पर मंगलवार को कहा कि वह न तो 'टायर्ड' हैं और न ही 'रिटायर्ड' हैं, लेकिन पार्टी को बहुमत मिलने पर आलाकमान मुख्यमंत्री के बारे में फैसला करेगा। उन्होंने साक्षात्कार में हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी में गुटबाजी की बात को भी खारिज किया और कहा कि मतभेद हो सकते हैं, लेकिन मनभेद नहीं है तथा आगामी चुनाव सभी नेता एकजुट होकर लड़ेंगे। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ने विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को भारी बहुमत मिलने की उम्मीद जताई और कहा कि जननायक जनता पार्टी (जजपा) और इंडियन नेशनल लोक दल 'वोट कटवा' पार्टी हैं जिनका कोई असर नहीं होने जा रहा है क्योंकि प्रदेश की 36 बिरादरी कांग्रेस को सत्ता में वापस लाने का मन बना चुकी हैं। हरियाणा में इस वर्ष अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित है।

शुक्राणु या अंडाणु दान करने वाले का बच्चे पर कोई कानूनी अधिकार नहीं : अदालत

मुंबई/भाषा। बंबई उच्च न्यायालय ने मंगलवार को कहा कि शुक्राणु या अंडाणु दान करने वाले का बच्चे पर कोई कानूनी अधिकार नहीं होता और वह उसका जैविक माता-पिता होने का दावा नहीं कर सकता। अदालत ने इसी के साथ 42 वर्षीय एक महिला को उसकी पांच वर्षीय जुड़वां बेटियों से मिलने की अनुमति दे दी। महिला ने अपनी याचिका में कहा कि सरोगेसी के जरिये पैदा हुई उसकी बेटियां उसके पति और अंडाणु दान करने वाली छोटी बहन के साथ रह रही हैं। याचिकाकर्ता के पति ने दावा किया था कि चूंकि उसकी साली ने अंडाणु दान दिया था, इसलिए उसे जुड़वा बच्चों की जैविक माता कहलाने का वैध अधिकार है और उसकी पत्नी का उन पर कोई अधिकार नहीं है। हालांकि, न्यायमूर्ति मिलिंद जाधव की एकल पीठ ने पति की दलील को खारिज करते हुए कहा कि याचिकाकर्ता की छोटी बहन अंडाणु दान करने वाली है लेकिन उसे यह दावा करने का कोई वैध अधिकार नहीं है कि वह जुड़वा बच्चों की जैविक मां है। अदालत ने कहा कि छोटी बहन की भूमिका अंडाणु दान करने की है, बल्कि वह स्वैच्छिक दानकर्ता है और अधिक से अधिक वह आनुवंशिक मां बनने की अर्हता रखती है, इससे अधिक कुछ नहीं।

अदाणी मामले में जेपीसी गठन और जाति जनगणना की मांग को लेकर जनांदोलन शुरू करेगी कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने मंगलवार को फैसला किया कि वह अदाणी समूह से जुड़े 'महाघोटाले' की जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के गठन और जाति जनगणना कराने की मांग तथा संविधान के सम्मान को लेकर देशव्यापी जनांदोलन शुरू करेगी।

पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में नेता राहुल गांधी के साथ महासचिवों, राज्य प्रभारियों और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रमुखों की बैठक में यह फैसला किया गया। बैठक के बाद खरगे ने बेरोजगारी, महंगाई और ''संविधान पर हमले'' को लेकर केंद्र की नरेन्द्र मोदी नीत सरकार पर निशाना साधा और उस पर देश के गरीबों एवं मध्य वर्ग के साथ विश्वासघात करने का आरोप लगाया। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि बेलगाम बेरोजगारी और अनियंत्रित मुद्रास्फीति तथा घरेलू बचत में कमी जैसे गंभीर मुद्दों पर पार्टी ने ध्यान केंद्रित किया है। खरगे ने आरोप लगाया कि संविधान पर हमला लगातार जारी है।

खरगे ने कहा, कांग्रेस पार्टी हमारे किसानों के लिए एमएसपी की कानूनी गारंटी की मांग को लेकर अपनी लड़ाई जारी रखेगी। हमारे देशभक्त युवाओं पर थोपी गई अग्निपथ योजना को ख़त्म किया जाना चाहिए। उन्होंने रेल सुरक्षा का मुद्दा उठाते हुए कहा, रेलगाड़ियों का पटरी से उतरना आम बात हो गई है, जिससे करोड़ों यात्रियों को परेशानी होती है। जलवायु संबंधी आपदाएं और ढहता बुनियादी ढांचा भी चिंता का कारण है। कांग्रेस की इस बैठक में पारित प्रस्ताव में कहा गया है, अदाणी महाघोटाले की जांच के लिए जेपीसी का गठन किया जाए, क्यूंकि इसमें प्रधानमंत्री पूरी तरह से शामिल हैं और इसमें वित्तीय बाजार नियामक द्वारा भी गंभीर रूप से समझौता किए जाने की जानकारी मिली है। इसमें पार्टी ने यह भी कहा, केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रव्यापी जाति जनगणना कराई जाए। भारत के संविधान के प्रति पूरी और सच्ची सम्मान की भावना, विशेष रूप से इसके आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक न्याय के प्रावधानों के संदर्भ में शाब्दिक और वास्तविक रूप से होनी चाहिए। कांग्रेस ने कहा, अगले कुछ हफ्तों में देश भर में इन तीनों मुद्दों पर जन आंदोलन अभियान चलाया जाएगा। कांग्रेस ने इस बैठक में भारत सरकार से बांग्लादेश में धार्मिक अल्पसंख्यकों और उनके पूजा स्थलों पर लक्षित हमलों को रोकने और उन्हें सुरक्षा, सम्मान और सद्भाव का जीवन जीने में सक्षम बनाने के लिए हरसंभव कदम उठाने का आह्वान किया।

अदाणी की सात कंपनियों के शेयर टूटे, तीन में लाभ

नई दिल्ली/भाषा। अदाणी समूह की 10 में से सात कंपनियों के शेयर मंगलवार को मामूली गिरावट के साथ बंद हुए। तीन कंपनियां... अदाणी टोटल गैस, अदाणी ग्रीन और अदाणी एनर्जी... बढ़त में रहीं। कारोबार समाप्ति पर अदाणी विल्मर का शेयर 2.37 प्रतिशत नीचे रहा। वहीं अदाणी एंटरप्राइजेज में 1.92%, अंबुजा सीमेंट्स में 1.86%, अदाणी पोर्ट्स में 1.24% की गिरावट रही। एसीसी (0.54%), अदाणी पावर (0.20 %) और एनडीटीवी (0.20%) भी नुकसान में रहे। हालांकि, अदाणी टोटल गैस का शेयर 1.94 प्रतिशत मजबूत हुआ।

आप ने सिसोदिया की रिहाई के उपलक्ष्य में 'सत्यमेव जयते' अभियान शुरू किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। आम आदमी पार्टी (आप) ने मंगलवार को सोशल मीडिया पर 'सत्यमेव जयते' नाम से अभियान शुरू किया। इससे कुछ दिन पहले ही पार्टी के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया आबकारी नीति से संबंधित मामलों में उच्चतम न्यायालय से जमानत मिलने के बाद तिहाड़ जेल से बाहर आए थे।

अभियान की शुरुआत करते हुए आप की नेता और दिल्ली की मंत्री आतिशी ने कहा कि पार्टी के सभी नेता और कार्यकर्ता मंगलवार अपराह्न तीन बजे से अपने सोशल मीडिया हैंडल पर डिस्प्ले पिक्चर में 'सत्यमेव जयते' का इस्तेमाल करेंगे। आतिशी ने कहा, हम भाजपा (भारतीय जनता पार्टी) को बताना चाहते हैं कि चाहे वह हमें कितना भी परेशान करे या हमारे नेताओं को लंबे समय तक जेल में रखे, अंततः सच्चाई सामने आएगी।

आप नेता ने कहा कि शीर्ष अदालत द्वारा सिसोदिया को जमानत देना सत्य की जीत है। उन्होंने बताया कि दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री 17 महीने बाद जेल से बाहर आए हैं। आतिशी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर जारी पोस्ट में कहा, सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं...17 महीने तक सच्चाई के लिए लड़ते हुए आज मनीष सिसोदिया जी हम सबके बीच हैं। सच्चाई की जीत के उपलक्ष्य में आम आदमी पार्टी 'सत्यमेव जयते' डीपी कैंपेन शुरू कर रही है।

उन्होंने कहा, आज से तानाशाही के खिलाफ सच्चाई की इस जंग में आम आदमी पार्टी के हर नेता और कार्यकर्ता के सोशल मीडिया अकाउंट पर यही डीपी होगी। आप भी सच्चाई की इस लड़ाई 'सत्यमेव जयते' अभियान में जरूर शामिल होइए।

'आप' द्वारा शुरू किए गए सत्यमेव जयते डीपी (डिस्प्ले पिक्चर) अभियान में पार्टी के रंगों की पृष्ठभूमि में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और सिसोदिया की तस्वीरें हैं। डीपी के शीर्ष पर हिंदी में 'सत्यमेव जयते' लिखा हुआ है जबकि नीचे आप के चुनाव चिह्न झाड़ू की तस्वीर है। 'सत्यमेव जयते' मुण्डकोपनिषद के एक श्लोक का हिस्सा है जिसका अर्थ है 'केवल सत्य की ही विजय होती है'।

देश का स्मार्टफोन बाजार दूसरी तिमाही में 3.2% बढ़कर 3.9 करोड़ इकाई पर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। देश में 2024 की दूसरी तिमाही में स्मार्टफोन बाजार में 3.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह 3.9 करोड़ इकाई पर पहुंच गया।

बाजार अनुसंधान कंपनी इंटरनेशनल डेटा कॉरपोरेशन (आईडीसी) ने मंगलवार को एक रिपोर्ट में कहा, चीनी स्मार्टफोन विनिर्माता वीवो का मात्रा के लिहाज से 16.5 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ बाजार में दबदबा रहा। इसकी बिक्री सालाना आधार पर 6.7

प्रतिशत बढ़ी। 'सुपर प्रीमियम' खंड में एप्पल सबसे आगे रही, जिसमें 67,000 रुपए से अधिक कीमत वाले स्मार्टफोन शामिल हैं। इसकी बाजार हिस्सेदारी 83 प्रतिशत, जबकि सैमसंग की 16 प्रतिशत रही। रिपोर्ट में कहा गया, कुल मिलाकर, वीवो ने वाई सीरीज, मिड-प्रीमियम वी सीरीज और प्रमुख एक्स फोल्ड 3 प्रो के जरिये विभिन्न मूल्य खंडों में कई पेशकश के साथ लगातार दूसरी तिमाही में बढ़त जारी रखी। मोटोरोला ने विभिन्न मूल्य खंडों में उत्पाद खंड के आधार पर सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की। वीवो के बाद शाओमी 13.5 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी के साथ दूसरे स्थान पर रही।

रिपोर्ट के अनुसार, सैमसंग 12.9 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ तीसरे स्थान पर खिसक गई, क्योंकि इसकी बिक्री में सालाना आधार पर 15.4 प्रतिशत की गिरावट आई है। 'आईडीसी वर्ल्डवाइड क्वार्टरली मोबाइल फोन ट्रैकर' के अनुसार, भारतीय स्मार्टफोन बाजार में 2024 की पहली छमाही में 6.9 करोड़ स्मार्टफोन की बिक्री होगी।

रिपोर्ट में कहा गया, प्रीमियम खंड (कीमत 50,000 रुपए से 67,000 रुपए तक) में एप्पल की हिस्सेदारी सालाना आधार पर बढ़कर 61 प्रतिशत हो गई, जबकि सैमसंग की हिस्सेदारी एक साल पहले के 21 प्रतिशत से बढ़कर 24 प्रतिशत हो गई। आईडीसी के एसोसिएट उपाध्यक्ष (उपकरण शोध) नवकेन्दर सिंह ने कहा, प्रवेश स्तर के प्रीमियम खंड (कीमत 6,700 रुपए से 33,500 रुपए) में अच्छी वृद्धि देखने को मिलेगी, जबकि एंट्री-लेवल खंड (कीमत 100 अमेरिकी डॉलर तक) में कम से कम इस साल चुनौती बनी रहेगी, भले ही किफायती 5जी स्मार्टफोन पेश करने के प्रयास किए जा रहे हों। साथ ही, जेनएआई स्मार्टफोन का प्रचार काफी तेज रहने की उम्मीद है। समग्र स्मार्टफोन बाजार में सबसे अधिक वृद्धि एंट्री-प्रीमियम खंड ने हासिल की। इसमें 16,000 रुपए से 33,500 रुपए तक की कीमत वाले फोन शामिल हैं। इस खंड की हिस्सेदारी 22 प्रतिशत से बढ़कर 30 प्रतिशत हो गई और सालाना आधार पर 42 प्रतिशत की उच्चतम वृद्धि दर्ज की गई। रिपोर्ट के अनुसार, तिमाही में 2.7 करोड़ 5जी स्मार्टफोन बेचे गए।

जलवायु परिवर्तन को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता : यूडीएफ

केरल में भूस्खलन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

तिरुवनंतपुरम। कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्षी गठबंधन यूडीएफ ने मंगलवार को कहा कि केरल के वायनाड एवं कोझीकोड जिलों में हाल ही में हुए भूस्खलन से संकेत मिलता है कि जलवायु परिवर्तन को अब और नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। विपक्ष ने इसके साथ ही भविष्य में प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिए एक प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली के कार्यान्वयन का सुझाव भी दिया।

राज्य विधानसभा में विपक्ष के नेता वी डी सतीशन ने कहा कि वायनाड और कोझीकोड के विलंगड गांव में भूस्खलन प्रभावित क्षेत्रों के पीड़ितों के पुनर्वास के लिए मुख्यमंत्री पिनराई विजयन को दिए गए सुझावों के साथ सिफारिशें की गई हैं। कांग्रेस नेता ने कहा कि विपक्ष 2021 से कह रहा है कि जलवायु परिवर्तन को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और इसका समाधान किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, विपक्ष ने अब वैज्ञानिक परीक्षण करने, आपदा संभावित क्षेत्रों की मैपिंग करने और प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली स्थापित करने का सुझाव दिया है। मुख्यमंत्री को प्रस्ताव सौंपे जाने के बाद संवाददाताओं से बातचीत करते हुये सतीशन ने कहा, इसके लिए केंद्र और राज्य सरकारों के वैज्ञानिक संस्थानों एवं मौसम विज्ञान विभागों तथा कोचीन विश्वविद्यालय जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के संस्थानों को मिलकर काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब केरल में ज्ञान आधारित समाज होने के दावे समय-समय पर किए जाते हैं, तो दुनिया में उपलब्ध सभी वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिए किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि केरल ने अतीत में कई प्राकृतिक आपदाओं का सामना किया है और इसलिए भविष्य में किसी भी विकास कार्य में जलवायु परिवर्तन को भी ध्यान

में रखना चाहिए। विपक्ष के नेता ने कहा कि यूडीएफ ने यह भी सुझाव दिया कि सरकार प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों के पुनर्वास के लिए एक कानून बनाने पर विचार करे। सतीशन ने मुख्यमंत्री को व्यक्तिगत रूप से प्रस्ताव सौंपे और कहा कि उन्हें विजयन से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। पीड़ितों के पुनर्वास के बारे में उन्होंने कहा कि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी पहले ही 100 घर बनाने का वादा कर चुके हैं और राज्य सरकार ने आश्वासन दिया है कि परियोजना के लिए जमीन मिलते ही वह विपक्ष के साथ बातचीत करेगी। सतीशन ने कहा कि विपक्ष ने सुझाव दिया है कि घरों का निर्माण करते समय, सामुदायिक जीवन पर आधारित टाउनशिप मॉडल अपनाया जाना चाहिए ताकि सभी प्रभावित व्यक्ति एक साथ रह सकें।

केरल भूस्खलन : प्रधानमंत्री के आश्वासन के मद्देनजर राज्य सरकार को पुनर्वास योजना बनानी होगी : राज्यपाल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

त्रिशूर(केरल)/भाषा। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आश्वासन दिया है कि वायनाड जिले में भूस्खलन से प्रभावित लोगों के पुनर्वास में संसाधनों के अभाव जैसी कोई समस्या नहीं होगी और अब इसके लिए विस्तृत योजना तैयार करना राज्य सरकार का काम है। यहां पत्रकारों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए खान ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भूस्खलन पीड़ितों के पुनर्वास के लिए दीर्घकालिक योजना तैयार करने का सुझाव दिया है और उन्होंने आश्वासन दिया है कि कार्यान्वयन में संसाधनों का अभाव बाधा नहीं बनेगा।

उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री के इस आश्वासन के बाद मैं बहुत आश्वस्त महसूस कर रहा हूं। यह एक सामान्य बयान है। उन्होंने यह भी बताया कि पीड़ितों के लिए देश भर से मदद आ रही है। खान ने बताया कि सोमवार को उन्हें राहत एवं पुनर्वास कार्य के लिए शत्रुघ्न स्वामी मंदिर से साढ़े तीन लाख रुपये प्राप्त हुए। इसके अलावा उनके कार्यालय को देश के अन्य हिस्सों से भी चेक प्राप्त हो रहे हैं, जिन्हें मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष में भेज दिया गया है।

उन्होंने कहा, लोग बड़े पैमाने पर मदद के लिए

आगे आ रहे हैं। पूरे देश में लोग वायनाड में भूस्खलन से प्रभावित लोगों के दुख और दर्द को साझा कर रहे हैं। इसलिए अब राज्य सरकार को एक विस्तृत योजना बनानी है।

खान ने कहा कि, यह आपात समय है और इस आपात समय में राज्य और केंद्र हम सभी एकमत हैं। 30 जुलाई को वायनाड के मुंदक्कई और चूरालामाला क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर भूस्खलन हुआ जिससे दोनों क्षेत्र लगभग तबाह हो गए।

राज्य सरकार के अनुसार, भूस्खलन से मरने वालों की संख्या सोमवार तक 229 तक पहुंच चुकी है और 130 से अधिक लोग अभी भी लापता हैं। बरामद कुल शवों में से 51 की अभी तक पहचान नहीं हो पाई है।

भारत-इजराइल ने आईआईटी-मद्रास में नए जल प्रौद्योगिकी केंद्र के लिए समझौता किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली। भारत और इजराइल ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-मद्रास (आईआईटी-मद्रास) में एक नए जल प्रौद्योगिकी केंद्र की स्थापना के लिए समझौता किया है। केंद्र द्वारा सभी के लिए सतत जल आपूर्ति प्राप्त करने के भारत के प्रयासों में प्रमुख 'योगदानकर्ता' के रूप में कार्य करने की उम्मीद है। भारत स्थित इजराइल दूतावास ने एक बयान में इस समझौते को एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच चल रहे सहयोग में एक महत्वपूर्ण 'मील का पत्थर'' बताया। प्रतिष्ठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास में जल प्रौद्योगिकी केंद्र स्थापित करने के लिए एक संयुक्त आशय पत्र पर हस्ताक्षर किए गए। बयान के मुताबिक, इजरायल दूतावास, आईआईटी मद्रास और आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय के अमृत मिशन द्वारा हस्ताक्षरित यह त्रिपक्षीय समझौता भारत में जल प्रबंधन की महत्वपूर्ण चुनौतियों से निपटने के लिए साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जल प्रौद्योगिकी केंद्र का लक्ष्य जल प्रौद्योगिकियों में नवाचार, अनुसंधान और क्षमता निर्माण का केंद्र बनना है, विशेष रूप से शहरी जल आपूर्ति के लिए टिकाऊ समाधानों पर ध्यान केंद्रित करने की दिशा में।

विशाखापत्तनम के मनोरंजन पार्क में लगी आग, 30 मिनट में काबू पाया गया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

विशाखापत्तनम/भाषा। आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में प्लास्टिक, फाइबर और फोम से बनी मूर्तियों वाले एक मनोरंजन पार्क में सोमवार देर रात आग लग गई, जिस पर लगभग 30 मिनट में काबू पा लिया गया। एक पुलिस अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी।

अधिकारी ने बताया कि आग लगने की घटना में कोई हताहत नहीं हुआ्। उन्होंने बताया कि आग पर 30 मिनट में काबू पा लिया गया। पुलिस के मुताबिक, आग सोमवार रात करीब 11.30 बजे लगी। पुलिस उपायुक्त अजीत वेजेंदला ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया, यह घटना आरके बीच पर डिनो पार्क में हुई्। आग से फाइबर और फोम से बनी मूर्तियां जल गईं। उन्होंने बताया कि आग लगने के कारणों का पता लगाया जा रहा है। फाइबर और फोम की मूर्तियों की ज्वलनशील प्रकृति के चलते आग की ऊंची लपटें उठीं और धुआं फैल गया। अधिकारी ने बताया कि दो दमकल गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग बुझाई गई।

आदिवासी-दलित समूहों ने न्यायालय के फैसले के विरोध में 21 अगस्त को केरल में हड़ताल का आह्वान किया

कोट्टयम। विभिन्न आदिवासी-दलित संगठनों ने संविधान के तहत अनुसूचित जातियों (एससी) और अनुसूचित जनजातियों (एसटी) के लिए आरक्षण के उप-वर्गीकरण के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय के हालिया फैसले के विरोध में 21 अगस्त को केरल में राज्यव्यापी हड़ताल का आह्वान किया है। विभिन्न आदिवासी-दलित संगठनों के नेताओं ने एक संयुक्त बयान में आरोप लगाया कि इस फैसले का उद्देश्य एससी, एसटी सूची को जाति के आधार पर विभाजित करना और एससी, एसटी श्रेणियों के भीतर 'क्रीमी लेयर' की शुरुआत करना है।

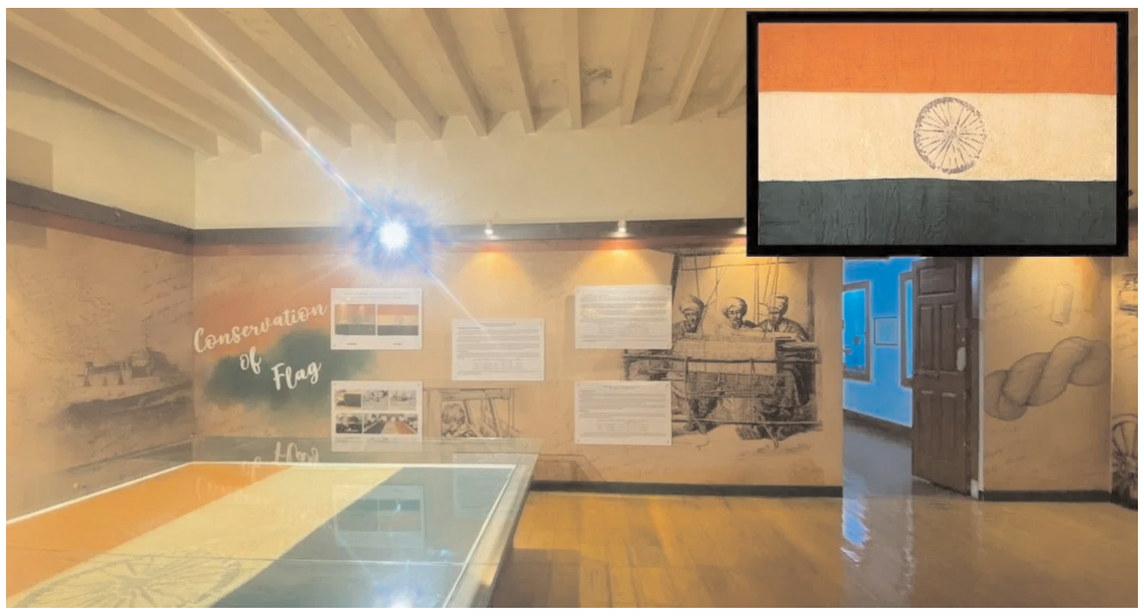

उन्होंने कहा कि आपदाओं से प्रभावित वायनाड जिला हड़ताल से मुक्त रहेगा। संगठनों ने घोषणा की कि राज्यव्यापी हड़ताल भीम आर्मी और विभिन्न दलित-बहुजन आंदोलनों द्वारा आहूत भारत बंद का हिस्सा है। बयान के अनुसार, प्राथमिक मांग यह है कि संसद सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को पलटने वाला कानून पारित करे। अगस्त माह की शुरुआत में प्रधान न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली सात न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने 6 और एक 1 के बहुमत से फैसला दिया कि राज्यों को अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों में उप-वर्गीकरण की अनुमति दी जा सकती है ताकि इन समूहों के भीतर अधिक पिछड़ी जातियों को आरक्षण सुनिश्चित हो सके।

न्यायमूर्ति बी. आर. गवई ने कहा था कि राज्यों को अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के बीच भी क्रीमी लेयर' की पहचान करने और उन्हें आरक्षण का लाभ नहीं देने के लिए एक नीति विकसित करनी चाहिए्। न्यायमूर्ति गवई ने एक अलग लेकिन सहमति वाला फैसला लिखा, जिसमें शीर्ष अदालत ने बहुमत के फैसले से कहा कि राज्यों को अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों का उप-वर्गीकरण करने का अधिकार है, ताकि अधिक वंचित जातियों के लोगों के उत्थान के लिए आरक्षित श्रेणी के भीतर आरक्षण प्रदान किया जा सके।

चेन्नई के फोर्ट संग्रहालय में सुरक्षित रखा है 15 अगस्त 1947 को फहराया तिरंगा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/चेन्नई। चेन्नई के सदियों पुराने फोर्ट सेंट जॉर्ज क्षेत्र में स्थित एक संग्रहालय की अमूल्य संपत्तियों में एक पुराना भारतीय तिरंगा भी है, जिसे 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र भारत के जन्म के समय फहराए जाने का दुर्लभ गौरव प्राप्त है। संस्कृति मंत्रालय के अनुसार फोर्ट संग्रहालय में रखा यह तिरंगा शुद्ध रेशम का बना है और 3.5 मीटर लंबा तथा 2.4 मीटर चौड़ा है।

उसने सोमवार को एक बयान में कहा, यह 1947 में फहराए गए तिरंगे झंडो में से बचा हुआ भारत का एकमात्र ध्वज है। यह ध्वज उस संपूर्ण संघर्ष का प्रमाण है, जो भारतीयों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किया था। मंत्रालय ने कहा कि यह ध्वज 15 अगस्त, 1947 को फोर्ट सेंट जॉर्ज में सुबह 5.30 बजे फहराया गया था।

'पीआईबी कल्चर' ने भी 'एक्स' पर एक पोस्ट साझा किया जिसमें तिरंगे के साथ संग्रहालय की गैलरी की कुछ तस्वीरें हैं। कोरोमंडल तट के साथ साथ चेन्नई के एक छोर पर स्थित इस किले की उत्पत्ति संबंधी जानकारी शहर के इतिहास से जुड़ी हुई है। तमिलनाडु पर्यटन विभाग की वेबसाइट के अनुसार, यह किला 23 अप्रैल, 1644 को सेंट जॉर्ज डे पर बनकर तैयार हुआ था, जिसे बाद में सेंट जॉर्ज फोर्ट नाम दिया गया।

इस किले के अस्तित्व में आने के साथ ही जार्ज टाउन नामक एक नयी बस्ती का जन्म हुआ जिसमें आसपास के गांव भी शामिल किए गए और बाद में यही बस्ती मद्रास यानि के आधुनिक समय का चेन्नई कहलाई। उस समय सत्ता का महत्वपूर्ण केंद्र रहे इस किले की छह मीटर ऊंची दीवारों ने अठारहवीं सदी में कई हमलों का सामना किया।

वेबसाइट के अनुसार, फोर्ट सेंट जार्ज किले का मुख्य आकर्षण इसका संग्रहालय है जिसे फोर्ट म्यूजियम कहा जाता है।इसमें बहुत ही व्यवस्थित दीर्घाओं में प्राचीन वस्तुओं का विविधतापूर्ण संग्रह है। तीन तलों पर दस दीर्घाओं में आधुनिक भारतीय इतिहास के विभिन्न दौर की 3,661 कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है। संस्कृति मंत्रालय के बयान में कहा गया है कि संग्रहालय में भारतीय स्वतंत्रता गैलरी भारतीय ध्वज के विकास और राष्ट्रीय ध्वज के पीछे की कहानियों को भी प्रदर्शित करती है। फोर्ट म्यूजियम को 31 जनवरी 1948 को जनता के लिए खोला गया था।

केरल उच्च न्यायालय ने न्यायमूर्ति हेमा समिति की रिपोर्ट जारी करने के खिलाफ याचिका खारिज की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोच्चि। केरल उच्च न्यायालय ने मंगलवार को राज्य सूचना आयोग के उस आदेश को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी, जिसमें न्यायमूर्ति के. हेमा समिति की रिपोर्ट जारी करने का निर्देश दिया गया था। रिपोर्ट में मलयालम फिल्म उद्योग में महिलाओं के सामने आने वाले मुद्दों का अध्ययन किया गया था। न्यायमूर्ति वी.जी. अरुण ने निर्देश दिया कि रिपोर्ट एक सप्ताह के भीतर प्रकाशित की जाए्।

याचिकाकर्ता के वकील सैबी जोस किदंगूर ने बताया कि अदालत ने यह कहते हुए आदेश खारिज कर दिया कि याचिकाकर्ता - साजिमोन परायिल - कोई पीड़ित पक्ष नहीं है। अदालत का विस्तृत आदेश अभी उपलब्ध नहीं है। अदालत ने 24 जुलाई को एक सप्ताह के लिए रिपोर्ट जारी करने पर रोक लगा दी थी और अंतरिम आदेश को समय-समय पर बढ़ाया गया था। अंतरिम आदेश को पिछली बार छह अगस्त को बढ़ाया गया था। फिल्म निर्माता परायिल ने सूचना आयोग के पांच जुलाई के आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें राज्य लोक सूचना अधिकारी (एसपीआईओ) को निर्देश दिया गया था कि वे रिपोर्ट में दी गई जानकारी को उचित रूप से प्रसारित करें, तथा यह सुनिश्चित करें कि इससे व्यक्तियों की गोपनीयता से समझौता न हो।

चेन्नई सेंट्रल और कोचुवेली के बीच विशेष ट्रेनें

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। अगले विशेष गाड़ियों इच्छा होना संचालित स्वतंत्रता दिवस के लंबे सप्ताहांत के दौरान यात्रियों की भारी भीड़ को नियंत्रित करने के लिए दक्षिण रेलवे ने विशेष ट्रेन सं . 06043/06044 डॉ एमजीआर चेन्नई सेंट्रल - कोचुवेली - डॉ एमजीआर चेन्नई सेंट्रल एसी एक्सप्रेस शुरु की है।

ट्रेन नं . 06043 डॉ एमजीआर चेन्नई सेंट्रल - कोचुवेली एसी एक्सप्रेस की दो सेवाएं 14 और 21 अगस्त, 2024 (बुधवार) को 15.45 बजे डॉ एमजीआर चेन्नई सेंट्रल से रवाना होगी और अगले दिन 08.30 बजे कोचुवेली पहुंचेगी। वापसी दिशा में ट्रेन सं. 06044 कोचुवेली - डॉ एमजीआर चेन्नई सेंट्रल एसी एक्सप्रेस 15 और 22 अगस्त, 2024 (गुरुवार) को 18.25 बजे कोचुवेली से रवाना होगी और अगले दिन 11.25 बजे डॉ एमजीआर चेन्नई सेंट्रल पहुंचेगी । ट्रेन नं. 06044 कोचुवेली-डॉ एमजीआर चेन्नई सेंट्रल एसी एक्सप्रेस का पेरम्बूर में अतिरिक्त ठहराव होगा।

डॉ. एमजीआर चेन्नई सेंट्रल/अवाडी और नागरकोइल के बीच विशेष ट्रेनें : ट्रेन नं. 06055 डॉ. एमजीआर चेन्नई सेंट्रल-नागरकोइल एसी सुपरफास्ट स्पेशल और ट्रेन नं. 06056 नागरकोइल-अवाडी एसी सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन चलाई जा रही है। ट्रेन संख्या 06055 डॉ एमजीआर चेन्नई सेंट्रल - नागरकोइल एसी सुपरफास्ट स्पेशल 14 अगस्त , 2024 (बुधवार) को 23.30 बजे डॉ एमजीआर चेन्नई सेंट्रल से रवाना होगी और अगले दिन 12.30 बजे नागरकोइल पहुंचेगी। वापसी दिशा में ट्रेन संख्या 06056 नागरकोइल- अवाड़ी एसी सुपरफास्ट स्पेशल 15 अगस्त, 2024 (गुरुवार) को 15.50 बजे नागरकोइल से रवाना होगी और अगले दिन 05.10 बजे अवाड़ी पहुंचेगी। इस ट्रेन में 14 - एसी थ्री टियर इकॉनमी कोच और 2 - लगेज कम ब्रेक वैन कोच होंगे।

भाजपा के सहयोगी देवनाथन यादव गिरफ्तार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी टी देवनाथन यादव को पुलिस ने एक गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान के जमाकर्ताओं के साथ धोखाधड़ी करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मंगलवार को यह जानकारी दी। इस साल देश में हुये आम चुनाव में केंद्र में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर राज्य के शिवगंगा लोकसभा सीट से यादव ने चुनाव लड़ा था, लेकिन वह हार गये थे। यादव को तिरुचिरापल्ली में आर्थिक अपराध शाखा के अधिकारियों की एक टीम ने गिरफ्तार किया और बाद में पूछताछ के लिए उन्हें चेन्नई लाया गया।

गिरफ्तारी के बाद कई

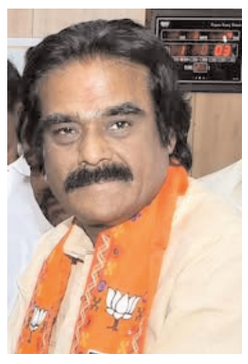

निवेशकों ने विरोध प्रदर्शन किया और शिकायतें कीं्। निवेशकों का दावा है कि यादव के नेतृत्व वाली वित्तीय संस्था (मायलापुर हिंदू शाश्वत निधि लिमिटेड) ने उनकी जमाराशियों पर आकर्षक उच्च ब्याज दर का वादा करके उनके साथ धोखाधड़ी की।

देवनाथन यादव एक राजनीतिक संगठन चलाते हैं्। उन्होंने 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के साथ गठबंधन किया और शिवगंगा निर्वाचन क्षेत्र से वह मैदान में उतरे थे। गिरफ्तारी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए तमिलनाडु भाजपा प्रमुख के अन्नामलाई ने कहा कि उनकी पार्टी मायलापुर हिंदू शाश्वत निधि लिमिटेड के निवेशकों के लिए न्याय सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

उन्होंने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, तमिलनाडु सरकार को गहन जांच करनी चाहिए और सभी निवेशकों से इसकी पुष्टि करनी चाहिए। अन्नामलाई ने कहा, साथ ही अगर यह द्रमुक सरकार की कानून-व्यवस्था और प्रशासनिक विफलता पर उंगली उठाने के लिए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के दलों को धमकाने का एक प्रयास है तो मैं इसकी कड़ी निंदा करता हूं।

चेन्नई पुलिस ने हिस्ट्री शीटर को किया गिरफ्तार

चेन्नई। चेन्नई पुलिस पर कथित तौर पर हमला करने और भागने का प्रयास करने वाले एक कुख्यात अपराधी पर मंगलवार को पुलिस को गोली चलानी पड़ी और उसके बाद उसे गिरफ्तार कर लिया।

एक अधिकारी ने बताया कि आरोपी के खिलाफ हत्या, हमला और जबरन वसूली समेत 10 से अधिक आपराधिक मामले लंबित हैं्। पुलिस टीम अपराध में इस्तेमाल किए गए एक हथियार की बरामदगी के लिए आरोपी को यहां चेटपेट के एक इलाके में ले जा रही थी, इस दौरान उसने टीम के दो पुलिस कर्मियों पर हमला किया और भागने का भी प्रयास किया। उन्होंने बताया कि पुलिस ने उसके पैर में गोली मारकर उसकी भागने की कोशिश को नाकाम कर दिया। टी.पी. छत्रम के रोहित राज को हमले में घायल हुए दो पुलिसकर्मियों के साथ किलपौक राजकीय मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

थेनी में छिपे राज को दो दिन पहले एक विशेष पुलिस दल पकड़ कर पूछताछ के लिए चेन्नई लाया था। बताया जा रहा है कि राज पर मायलापोर के एक अन्य हिस्ट्री शीटर की हत्या में शामिल होने का आरोप है। पुलिस के अनुसार, एसआई कलईसेलवी को आत्मरक्षा में गोली चलानी पड़ी और संदिग्ध को पकड़ लिया।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया भारत सरकार का उपक्रम | Union Bank of India A Government of India undertaking

क्षेत्रीय कार्यालय - कांचीपुरम
न : 168, लिंगी चेट्टी स्ट्रीट,
पैरिस कॉर्नर, जॉर्ज टाउन
चेन्नई - 600001

निविदा आमंत्रण सूचना

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, एक अग्रणी राष्ट्रीयकृत बैंक, एतद्द्वारा, क्षेत्रीय कार्यालय - कांचीपुरम बिल्डिंग के लिए प्रस्तावित फर्निशिंग कार्य, इलेक्ट्रिकल और एयर कंडीशनिंग कार्यों के लिए तमिलनाडु में पंजीकृत कार्यालय वाले पात्र ठेकेदारों से निर्धारित प्रारूप में दो बोली प्रणालियों यानी तकनीकी बोली और वाणिज्यिक मूल्य बोली में सीलबंद निविदाएं आमंत्रित करता है, साथ ही कांचीपुरम में आरएलपी और एमएलपी भी शामिल है, जो 46 ए, विलाकादाई कोइल स्ट्रीट, रंगास्वामी कुलम लाइब्रेरी, कांचीपुरम-631 501 के सामने स्थित है।

हम निविदा के बारे में महत्वपूर्ण विवरण नीचे प्रस्तुत करते हैं:

बोली दस्तावेजों की उपलब्धता की अवधि	14.08.2024 से 03.09.2024 तक
बोलियाँ प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि और समय	03.09.2024 दोपहर 3.00 बजे तक
बोलियाँ खोलने की तिथि और समय	03.09.2024 दोपहर 3.30 बजे
अनुमानित परियोजना लागत (लगभग)	रू. 87.60 लाख
निविदा दस्तावेजों की लागत	रू. 1000/-
बयाना राशि जमा (2%)	रू. 1,80,000/-

निविदा बैंक की वेबसाइट www.unionbankofindia.co.in और सरकारी निविदा पोर्टल www.eprocure.gov.in से डाउनलोड की जा सकती है। निविदा प्रस्तुत करना यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय कांचीपुरम, लिंगी चेट्टी स्ट्रीट, पैरिस कॉर्नर, चेन्नई में होगा।

दिनांक : 14.08.2024
स्थान - चेन्नई

सहायक महाप्रबंधक
क्षेत्रीय प्रमुख - कांचीपुरम

भारी बारिश से उत्पन्न हुई स्थिति के समाधान के लिए संबंधित अधिकारी करें मौका-मुआयना

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मंगलवार को गत कुछ दिनों में जयपुर में हुई भारी बारिश से उत्पन्न स्थिति के संबंध में मुख्यमंत्री निवास पर उच्चाधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि भारी बारिश से जयपुर शहर की साफ-सफाई, ड्रेनेज, सीवरेज, क्षतिग्रस्त सड़कों सहित विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए संबंधित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी जयपुर शहर का दौरा करें तथा मुख्यमंत्री कार्यालय में इसकी प्रगति रिपोर्ट भिजवायें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि प्रभावित इलाकों में लोगों को तत्काल राहत पहुंचाई जाये तथा बचाव एवं राहत कार्यों में संवेदनशीलता के साथ काम करें।

शर्मा ने नगर निगम के अधिकारियों को निर्देश दिए कि शहर के सभी नालों एवं ड्रेनेज सिस्टम की नियमित सफाई की जाए ताकि बारिश के समय उनमें अवरोध ना उत्पन्न हो। साथ ही, यह भी सुनिश्चित किया जाए कि कहीं पर भी जलभराव जैसी स्थिति उत्पन्न ना हो। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि नालों पर हो रहे अतिक्रमण को सख्ती से हटाया जाए। उन्होंने बैठक में स्पष्ट कहा कि अपनी जिम्मेदारी से कोताही बरतने वाले प्रत्येक कार्मिक पर सख्ती से कार्यवाही की जाएगी। मुख्यमंत्री ने जयपुर विकास प्राधिकरण एवं नगर निगम विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे आपस में समन्वय के साथ काम कर टूटी हुई सड़कों की मरम्मत तथा सड़क के गड्ढों को भरने पर विशेष ध्यान दें, जिससे दुर्घटनाओं से बचा जा सके। उन्होंने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि इन परिस्थितियों में अलर्ट मोड पर काम करते हुए किसी भी प्रकार की आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए सभी प्रकार की तैयारियां रखें। उन्होंने कहा कि जयपुर शहर की साफ-सफाई, ड्रेनेज, सीवरेज, जलभराव सहित विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए हर 10 दिन में संबंधित विभाग बैठक लें।

शर्मा ने शहर में ट्रांसफार्मरों के खुले तारों पर गहरी नाराजगी व्यक्त करते हुए अधिकारियों को आज ही मौका मुआयना कर सभी ट्रांसफार्मर के रख-रखाव के निर्देश दिये जिससे किसी भी तरह की दुर्घटना ना हो। उन्होंने कहा कि एक ऐसा सिस्टम विकसित किया जाये जिससे प्लेटफार्म बनाकर उस पर ट्रांसफार्मर लगाया जाये।

मुख्यमंत्री ने भारी बारिश में किया जयपुर शहर का सघन दौरा

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपने दिल्ली दौरे से लौटते ही सोमवार शाम को जयपुर शहर का लगभग तीन घंटे लगातार निरीक्षण कर बारिश से उत्पन्न स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने सांगानेर, मानसरोवर, जगतपुरा एवं विधाधर नगर क्षेत्रों में जलभराव वाली जगहों, क्षतिग्रस्त सड़कों, गड्ढों, ड्रेनेज सिस्टम एवं सार्वजनिक प्रकाश से संबंधित समस्याओं के त्वरित निस्तारण के निर्देश प्रदान किए और संवेदनशीलता के साथ आमजन से संवाद भी किया। शर्मा ने मालवीय नगर स्थित अंडरपास का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को अंडरपास के लिए पुख्ता कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए, ताकि यहां जलभराव ना हो और किसी प्रकार की दुर्घटना भी घटित ना हो। उन्होंने जवाहर सर्किल स्थित बस शेल्टर के क्षतिग्रस्त होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए अधिकारियों को व्यवस्था दुरूस्त करने के लिए निर्देशित किया। मुख्यमंत्री ने बी-2 बायपास एवं महारानी फार्म क्षेत्र में द्रव्यवती नदी का सघन निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे नदी को स्वच्छ रखने के लिए हर संभव कदम उठाएं और किसी भी प्रकार से इसे दूषित ना होने दें।

कई जिलों में भारी बारिश का 'रेड अलर्ट', मुख्यमंत्री ने हवाई सर्वेक्षण किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान में लगातार मूसलाधार बारिश के चलते राजधानी जयपुर सहित कई जिलों में स्कूल मंगलवार को भी बंद रहे। राज्य में दो दिन में बारिश संबंधी जनित में 22 लोगों की मौत हो चुकी है। इस बीच मौसम विभाग ने मंगलवार व बुधवार को भी कई इलाकों में 'रेड अलर्ट' यानी अति भारी बारिश की चेतावनी जारी की है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मंगलवार को दौसा, करौली और भरतपुर जिलों में भारी बारिश से प्रभावित इलाकों का हवाई सर्वेक्षण किया। उन्होंने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, 'आज करौली जिले के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का हवाई सर्वेक्षण कर जलभराव व अतिवृष्टि प्रभावित क्षेत्रों का जायज़ा लेने के पश्चात संबंधित विभागीय अधिकारियों की बैठक ली व कुशल आपदा प्रबंधन हेतु निर्देश दिया।'' वहीं कैबिनेट मंत्री के पद से इस्तीफा देने के बाद आधिकारिक बैठकों में हिस्सा नहीं ले रहे किरोड़ी लाल मीणा भी मंगलवार को सक्रिय नजर आए। उन्होंने कई प्रभावित इलाकों का दौरा किया और दौसा में अधिकारियों की बैठक ली। मौसम केंद्र जयपुर के अनुसार 13-14 अगस्त को भरतपुर, जयपुर, अजमेर व कोटा संभाग के कुछ भागों में भारी व कहीं अति भारी बारिश होने की प्रबल संभावना है। 15-16 अगस्त को पूर्वी राजस्थान के कुछ भागों में मध्यम व कहीं-कहीं भारी बारिश हो सकती है। मौसम केंद्र ने मंगलवार को टोंक, करौली व दौसा जिलों के लिए 'रेड अलर्ट' व जयपुर, अलवर, झालावाड़ सहित जिलों के लिए 'ऑरेंज अलर्ट' जारी किया है।

चिकित्सा विभाग में रिक्त पदों को भरने की त्वरित कार्रवाई हो : राज्यपाल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे ने मंगलवार को कहा कि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में रिक्त पदों को भरने के लिए त्वरित कार्रवाई करने पर जोर दिया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि 'टीबी मुक्त राजस्थान' के लिए तेजी से हो काम हो। बागडे ने राजभवन में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक की।

इसमें बागडे ने कहा है कि राज्य के प्रत्येक नागरिक का स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए चिकित्सा विभाग जवाबदेही रखते हुए काम करे। उन्होंने कहा कि जिस राज्य में स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर होती है, वही तेजी से विकास करता है। आधिकारिक बयान के अनुसार बागडे ने पिछड़े और आदिवासी जिलों में स्वास्थ्य सेवाओं पर ज्यादा ध्यान देने, वहां डॉक्टर की उपलब्धता रहे, इसकी निगरानी रखते हुए प्रभावी काम करने पर जोर दिया।

उन्होंने विभाग के रिक्त पदों को भरने के लिए तुरंत कार्रवाई करने और पदोन्नतियां भी यथा समय करवाने के निर्देश दिए।

राज्यपाल ने 'टीबी मुक्त राजस्थान' के लिए अभियान चलाकर कार्यवाही किए जाने के भी निर्देश दिए। उन्होंने तहसील, गांव और जिला स्तर पर इस संबंध में विशेष कार्य करने और अगले तीन साल में राजस्थान को पूरी तरह से टीबी मुक्त करने के लिए सबको मिलकर प्रयास करने के निर्देश दिए।

राज्यपाल ने प्रदेश के जनजातीय और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी चिकत्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाने का आह्वान किया। उन्होंने चिकित्सकों से गांव, तहसील में अनिवार्य रूप से पहुंचने और सेवा भाव से कार्य करने पर जोर दिया। इससे पहले राज्यपाल ने राजस्थान में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी ली। उन्होंने मुख्यमंत्री आयुष्मान में लाभान्वित रोगियों के बारे में जानकारी लेते हुए राज्य में प्रारंभ 'रामाश्रय' योजना की सराहना की। उन्होंने एनीमिया और टीबी मुक्त राजस्थान के लिए प्रभावी काम किए जाने के निर्देश दिए।

बैठक में मौजूद चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह ने कहा कि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में राजस्थान को अग्रणी बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ यह सुनिश्चित किया जा रहा है की प्रत्येक नागरिक को उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाए।

बीएसएफ ने राजस्थान में भारत-पाकिस्तान सीमा पर निगरानी बढ़ाई

जोधपुर। राजस्थान में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने भारत-पाकिस्तान सीमापार से मादक पदार्थों और हथियारों की ड्रोन की मदद से तस्करी की बढ़ती घटनाओं से निपटने के लिए अपना अभियान तेज कर दिए हैं। बीएसएफ के महानिरीक्षक (राजस्थान फ्रंटियर) एम एल गर्ग ने कहा कि बल उन्नत ड्रोन रोधी तकनीक का इस्तेमाल कर रहा है, जिसमें 'डिटेक्शन सिस्टम' (ड्रोन का पता लगाने की प्रणाली) और ड्रोन रोधी तोप शामिल हैं, जिसके परिणामस्वरूप इस साल अब तक चार ड्रोन को सफलतापूर्वक मार गिराया जा चुका है।

गर्ग ने इस संभावना को स्वीकार किया कि कुछ ड्रोन उस पर लदा सामान गिराने के बाद वापस लौट गए होंगे गर्ग ने कहा, हमारा मानना ङ्कहै कि 80-85 प्रतिशत मामलों में हमने ड्रोन की सफलतापूर्वक पहचान करके उन्हें मार गिराया है। उन्होंने बताया कि पता लगाये गए सभी ड्रोन चीनी मूल के थे, हालांकि उन्हें पाकिस्तान में उनके विशिष्ट तस्करी कार्यों के अनुरूप संशोधित किया गया था। बीएसएफ ने इस वर्ष अब तक पाकिस्तान से लगती राज्य सीमा से लगभग 137 करोड़ रुपये मूल्य की 30 किलोग्राम हेरोइन जब्त की है।

गर्ग ने कहा कि अभियान में 38 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें छह पाकिस्तानी और एक बांग्लादेशी नागरिक शामिल हैं, जिन पर सीमापार तस्करी और घुसपैठ गतिविधियों में शामिल होने का संदेह है।

तिरंगा राष्ट्रीय स्वाभिमान, एकता और अखण्डता का प्रतीक : शर्मा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मंगलवार को सुबह 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत तिरंगा मैराथन को रवाना किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि तिरंगा राष्ट्रीय स्वाभिमान, एकता और अखण्डता का प्रतीक है।

उन्होंने कहा कि तिरंगा हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान, एकता तथा अखण्डता का प्रतीक है तथा इस तिरंगा मैराथन के माध्यम से हम सभी राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के सम्मान में देश के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रहे हैं।

शर्मा ने कहा कि 'हर घर तिरंगा' अभियान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ऐसी अभिनव पहल है, जो देश के प्रत्येक नागरिक में राष्ट्रीय स्वाभिमान और गौरव की भावना जाग्रत करती है। उन्होंने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के तत्वाधान में शुरू किया गया यह अभियान अब एक जन आंदोलन बन गया है। शर्मा ने कहा कि इस अभियान के तहत घर में ध्वज फहराना ना केवल तिरंगे से व्यक्तिगत जुड़ाव का अहसास करवाता है, बल्कि राष्ट्र निर्माण में हम सभी नागरिकों की प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है।

मुख्यमंत्री शर्मा ने मंगलवार की सुबह 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत तिरंगा मैराथन को अल्बर्ट हॉल से रवाना किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने गुब्बारे छोड़कर 'हर घर में तिरंगा' फहराने का संदेश दिया।

शर्मा ने राष्ट्रीय ध्वज थामे स्वयं भी धावकों के साथ मैराथन में हिस्सा लिया। जयपुर ग्रेटर नगर निगम द्वारा आयोजित इस मैराथन में बड़ी संख्या में धावकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

आसाराम को मिली 7 दिन की 'आजादी'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जोधपुर। जोधपुर हाई कोर्ट ने मंगलवार को विवादित धर्मगुरु आसाराम को 7 दिन की पैरोल दी है। इस फैसले के तहत आसाराम को जेल से 7 दिनों के लिए रिहा किया जाएगा।

राजस्थान हाईकोर्ट से उपचार के लिए आसाराम को पैरोल दी गई है। आसाराम की तबीयत को देखते हुए उसे पैरोल दी गई है. पुलिस कस्टडी में आसाराम उपचार के लिए महाराष्ट्र जाएगा।

पैरोल के दौरान उन्हें कुछ शर्तों का पालन करना होगा, जिनमें कहीं और यात्रा न करना और पुलिस को नियमित रूप से रिपोर्ट करना शामिल है। आसाराम, जोकि एक नाबालिग लड़की से यौन शोषण के मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं, ने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए पैरोल के लिए आवेदन किया था। इस पर विचार करते हुए जोधपुर हाई कोर्ट ने उन्हें यह अस्थायी रिहाई दी है।

इससे पहले, डेरा सच्चा सौदा प्रमुख राम रहीम को भी पैरोल दी गई थी, जिससे इस तरह के मामलों में अदालतों के निर्णय पर एक बार फिर से बहस छिड़ गई है। आसाराम की पैरोल को लेकर भी जनता और मीडिया में मिश्रित प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं। आसाराम को पैरोल पर रिहा करने का यह निर्णय कई लोगों के लिए विवादास्पद हो सकता है, क्योंकि वह पहले से ही एक गंभीर अपराध के लिए दोषी पाए गए हैं। हालांकि, अदालत ने अपने फैसले में साफ किया है कि यह रिहाई केवल 7 दिनों के लिए है और इसके बाद उन्हें वापस जेल जाना होगा।

उदयपुर में 'सिकल सेल वेलनेस हब' स्थापित करने के लिए हुआ समझौता

जयपुर। गैर सरकारी संगठन 'नोवो नॉर्डिस्क एजुकेशन फाउंडेशन' ने उदयपुर में 'सिकल सेल वेलनेस हब' स्थापित करने के लिए रवींद्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज के साथ एक समझौता किया है। फाउंडेशन की ओर से यहां जारी एक बयान के अनुसार इस पहल के तहत फाउंडेशन और आरएनटी मेडिकल कॉलेज सिकल सेल रोग (एससीडी) मिलकर रोगियों की देखभाल के लिए भारत का पहला 'सिकल सेल वेलनेस हब' स्थापित करेंगे। इस आशय के समझौते ज्ञापन (एमओयू) पर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. विपिन माथुर और फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी विक्रांत श्रोत्रिय ने हस्ताक्षर किए। इसके अनुसार यह सार्वजनिक-निजी भागीदारी भारत सरकार के राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन 2023 के हिस्से के रूप में 2047 तक भारत से एससीडी को खत्म करने की प्रतिबद्धता से जुड़ी है।

कोलकाता की घटना के विरोध में रेजिडेंट चिकित्सकों की हड़ताल से सेवाएं आंशिक रूप से प्रभावित

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर।कोलकाता में महिला डॉक्टर की दुष्कर्म के बाद हत्या की घटना के विरोध में मंगलवार को रेजिडेंट डॉक्टरों की हड़ताल के कारण जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल सहित सरकारी चिकित्सालयों में स्वास्थ्य सेवाएं आंशिक रूप से प्रभावित रहीं। हालांकि, रेजिडेंट चिकित्सकों की हड़ताल के कारण आपातकालीन सेवाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जयपुर एसोसिएशन ऑफ रेजिडेंट डॉक्टर्स (जार्ड) ने मंगलवार शाम को ओपीडी सहित अन्य सेवाओं को तत्काल बंद करने की घोषणा की। उन्होंने पारदर्शी जांच, जिम्मेदार अधिकारियों के इस्तीफे, पीड़ित के परिवार को पर्याप्त मुआवजा, केंद्रीय सुरक्षा अधिनियम के कार्यान्वयन और देश भर के सभी मेडिकल कॉलेजों में कार्यस्थल सुरक्षा उपायों की मांग की। जार्ड के अध्यक्ष डॉ. मनोहर सियोल ने कहा कि आपातकालीन सेवाएं अप्रभावित रहीं। चिकित्सकों ने घटना के खिलाफ विरोध प्रदर्शन भी किया। उन्होंने कहा कि रेजिडेंट चिकित्सकों ने ओपीडी, ऑपरेशन थिएटर और वार्ड सहित सभी गैर-जरूरी सेवाओं को निलंबित कर दिया है। डॉ सियोल ने कहा, गंभीर रूप से बीमार रोगियों की आवश्यक देखभाल सुनिश्चित करने के लिए आपातकालीन सेवाएं जारी हैं।

राजधानी जयपुर में सबसे बड़े सरकारी अस्पताल सवाई मानसिंह चिकित्सालय के अधीक्षक डॉ. सुशील भाटी ने कहा कि अस्पताल की सेवाओं के सुचारू संचालन के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि लगातार हो रही बारिश के कारण ओपीडी में आने वाले मरीजों की संख्या तुलनात्मक रूप से कम है और ओपीडी को सामान्य रूप से संचालित करने के लिए वरिष्ठ डॉक्टरों को ओपीडी में लगाया गया है।

मंत्री ने पुलिस हिरासत में सैनिक से मारपीट मामले में अधिकारियों को फटकार लगाई

जयपुर। राजस्थान के मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने सोमवार को शिप्रा पथ थाने में भारतीय सेना के एक सेवारत सैनिक को कथित तौर पर निर्वस्त्र कर पीटने के मामले में पुलिस अधिकारियों को फटकार लगाई। मामला सामने आने के बाद एक पुलिस उपनिरीक्षक और तीन कांस्टेबल को थाने से हटाकर पुलिस लाइन भेज दिया गया और जांच के आदेश दिए गए। सैनिक कल्याण मंत्री राठौड़ भी सेना में सेवा दे चुके हैं। वह थाने पहुंचे और मामले पर आपत्ति जताई और वहां मौजूद अधिकारियों को फटकार लगाई।

राठौड़ ने संवाददाताओं से कहा, एक सेवारत सैनिक को कुछ पुलिसकर्मियों ने निर्वस्त्र कर दिया और डंडों से पीटा और फिर उसे लोगों के बीच बैठा दिया और कुछ पुलिसकर्मियों ने उससे यह दोहराने को कहा कि पुलिस भारतीय सेना का 'बाप' है। उन्होंने कहा, यह बहुत दुख की बात है और यह उन दो-तीन लोगों की घिनौनी मानसिकता को दर्शाता है जिन्होंने ऐसा किया।

उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने 'हर घर तिरंगा' रैली को दिखाई हरी झंडी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत मंगलवार 13 अगस्त को प्रातः 10.30 बजे कलेक्ट्रेट परिसर से जिला प्रशासन, जिला परिषद और आईसीडीएस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित विशाल तिरंगा यात्रा रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र प्रेम की भावना से जोड़ा है। यह समस्त देशवासियों को एकता के सूत्र में पिरोने का पर्व है। उन्होंने कहा कि इस अभियान में हर वर्ग, हर श्रेणी के व्यक्ति का योगदान नितांत आवश्यक है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए हम सभी को हर संभव प्रयास करने हैं। उन्होंने प्रत्येक घर पर तिरंगा फहराने की अपील भी की।

उपमुख्यमंत्री के कार्यक्रम में उपस्थित सभी जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, कार्मिकों, युवाओं महिलाओं सहित प्रत्येक व्यक्ति को तिरंगा प्रतिज्ञा भी दिलवाई। इसके साथ ही तिरंगा कैनवास पर 'हर घर तिरंगा' का संदेश देते हुए हस्ताक्षर कर राष्ट्र भक्ति का संदेश दिया। उन्होंने 'नशा मुक्त भारत अभियान' के तहत नशे के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान के अंतर्गत हस्ताक्षर कर नशा मुक्ति का संदेश भी दिया। शहर विधायक अतुल भंसाली और शेरगढ़ विधायक बाबू सिंह राठौड़ ने कार्यक्रम स्थल पर उपमुख्यमंत्री को पुष्प गुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया।

जिला कलेक्टर गौरव अग्रवाल ने उपमुख्यमंत्री को पौंधा भेंट कर उनका अभिनंदन किया। यह रैली कलेक्ट्रेट परिसर से पावटा सर्कल, सोजती गेट, घंटाघर, पुलिस लाइन होती हुई के.एन.कॉलेज से पावटा सर्कल और पुनः कलेक्ट्रेट परिसर पहुंची।

बंगाल ऐसा प्रदेश बन गया है जहां कानून व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रह गई : नड्डा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नड्डा ने कहा कि दु:ख की बात ये है कि महिलाओं पर अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है और यह तब हो रहा है जब राज्य की सीएम महिला है, यह चिंताजनक

नई दिल्ली/भाषा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जे. पी. नड्डा ने कलकत्ता उच्च न्यायालय द्वारा आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में एक महिला चिकित्सक के साथ कथित तौर पर बलात्कार करने के बाद हत्या के मामले की जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को सौंपे जाने का स्वागत किया और उम्मीद जताई कि अब सच्चाई सामने आएगी।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री नड्डा ने एक वीडियो जारी कर पश्चिम बंगाल सरकार पर इस मामले को दबाने की कोशिश करने का आरोप लगाया और दावा किया कि बंगाल एक ऐसा प्रदेश बन गया है जहां कानून व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रह गई है। उन्होंने कहा, उच्च न्यायालय ने इस मामले को सीबीआई को सौंपने को कहा है। इसका हम स्वागत करते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि सीबीआई जांच से इस मामले में दूध का दूध और पानी का पानी होगा। सच्चाई सामने आएगी। नड्डा ने कहा कि पिछले दो दिनों में बहुत से चिकित्सकों के संगठनों ने उनसे मुलाकात की और उन्होंने सभी को आश्वासन दिया है कि सरकार इस मामले में सभी आवश्यक कदम उठाएगी। उन्होंने कहा, बंगाल में जो घटना हुई है वह सच में दिल दहला देने वाली और देश को झकझोर देने वाली है। मैं इस अमानवीय घटना की निंदा करता हूं। उन्होंने कहा, जिस तरीके से सरकार ने इसे छिपाने और जनता की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश की, मैं इसकी भी कड़े शब्दों में निंदा करता हूं। इसकी जितनी भर्त्सना की जाए वह कम है। बंगाल एक ऐसा प्रदेश बन गया है जहां कानून व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रह गई है। अराजकता चरम पर है।

भाजपा अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर निशाना साधते हुए कहा कि और दुख की बात ये है कि पश्चिम बंगाल में महिलाओं पर अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है और यह सब कुछ तब हो रहा है जब राज्य की मुख्यमंत्री एक महिला हैं। उन्होंने कहा, यह और भी चिंताजनक है।

कोलकाता दुष्कर्म मामले पर इस्तीफा दें ममता : गिरिराज

बेगुसराय (बिहार)/भाषा। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कोलकाता में एक डॉक्टर की बलात्कार के बाद हत्या के मामले पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से इस्तीफा मांगा है। सिंह ने अपने निर्वाचन क्षेत्र बेगुसराय में पत्रकारों से कहा कि ममता बनर्जी को इस घटना पर शर्म आनी चाहिए, क्योंकि यह वर्षों पहले दिल्ली में हुए कुख्यात निर्भया सामूहिक बलात्कार से भी अधिक भयानक है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता ने आरोप लगाया कि अपराध के लिए गिरफ्तार किया गया व्यक्ति ''डमी'' है और असली दोषियों को तृणमूल कांग्रेस से निकटता के कारण बचाया जा रहा है। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी हैं।

सिंह ने आरोप लगाया, न केवल राजनीतिक नेताओं, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने अब तक की जांच में अविश्वास व्यक्त किया है, क्योंकि ममता बनर्जी के सत्ता में रहने की वजह से छानबीन के साथ गंभीर समझौता किया गया है।

उन्होंने कहा कि इसलिए, ममता बनर्जी को मुख्यमंत्री पद छोड़ देना चाहिए और जांच पूरी होने तक पश्चिम बंगाल को राज्यपाल शासन में रहने देना चाहिए। सिंह ने कहा, उन्हें (ममता) खुद ही इस्तीफा दे देना चाहिए और केंद्र द्वारा ऐसा करने के लिए कहे जाने तक इंतजार नहीं करना चाहिए। सिंह ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न पर देर से चिंता जताने के लिए कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा और समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव पर भी निशाना साधा।

उपचुनाव और अगले विधानसभा चुनाव में भी करेंगे भाजपा का सफाया : अखिलेश यादव

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ/भाषा। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करके लोकतंत्र को कमजोर करने की कोशिश का आरोप लगाते हुए मंगलवार को कहा कि उनकी पार्टी लोकसभा चुनाव के बाद आगामी उपचुनाव तथा 2027 के विधानसभा चुनाव में भी भाजपा को हराने के लिए तैयार है।

यादव ने पार्टी के राज्य मुख्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए सत्तारूढ़ दल पर आरोप लगाया, भाजपा लोकतांत्रिक व्यवस्था को नष्ट करना अपना अधिकार मानती है। वह निर्वाचन प्रक्रिया को भी प्रभावित करने का काम करती है। भाजपा लोकतंत्र को कमजोर करना चाहती है। भाजपा की इन साजिशों के खिलाफ सतर्क और सावधान रहने की जरूरत है। भाजपा की नीयत ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि इसी साल हुए लोकसभा चुनावों में सपा ने भाजपा को हराया है और अब आगामी उपचुनाव तथा आगामी 2027 के विधानसभा चुनाव में भी उनकी पार्टी भाजपा का सफाया करने को तैयार है।

इसी साल जून में सम्पन्न हुए लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने भाजपा को झटका देते हुए उत्तर प्रदेश की 80 में से 37 सीटें जीती थी, जबकि उसकी सहयोगी कांग्रेस को छह सीटों पर कामयाबी मिली थी।

यादव ने कहा कि जनता के संवैधानिक अधिकारों के खिलाफ भाजपा के षड्यंत्र को विफल करने के लिए सपा द्वारा मतदाताओं को जागरूक बनाने का अभियान भी चलाया जा रहा है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा, वे मतदाता सूची को ठीक कराने का काम प्राथमिकता से करवायें ताकि भाजपा किसी भी साजिश या षडयंत्र में सफल न हो सके। जनता और सभी मतदाता इस बात का ख्याल रखें कि भाजपा मतदाता सूची में कोई गड़बड़ी कर चुनाव जीतने की नापाक कोशिश में कामयाब न होने पाये।

अखिलेश यादव ने कहा कि कोई भी संगठन सच्चाई और निष्ठा से चलता है और सपा के नेताओं को जनता से निकट सम्पर्क रखते हुए उनके साथ सम्मान से पेश आना चाहिए।

लोकसभा चुनाव में पत्नी को बहन के खिलाफ उतारकर गलती की : अजित पवार

मुंबई/भाषा। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने मंगलवार को कहा कि उन्होंने हाल ही में संपन्न लोकसभा चुनाव में अपनी पत्नी सुनेत्रा पवार को चचेरी बहन सुप्रिया सुले के खिलाफ उतारकर गलती की। महाराष्ट्र में साल के अंत में प्रस्तावित विधानसभा चुनाव से पहले मतदाताओं के बीच पहुंच बनाने की कवायद के तहत राज्य भर में 'जन सम्मान यात्रा' निकाल रहे अजित ने कहा कि राजनीति को घर-परिवार से बाहर रखना चाहिए। लोकसभा चुनाव में सुनेत्रा पवार ने महाराष्ट्र की बारामती सीट पर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी-शरद चंद्र पवार (राकांपा-एसपी) की प्रत्याशी सुप्रिया सुले को चुनौती दी थी, जो अजित के चाचा शरद पवार की बेटी हैं। हालांकि, इस चुनाव में सुनेत्रा को हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन बाद में वह राज्यसभा के लिए निर्वाचित हुईं। पिछले साल जुलाई में अजित पवार और उनके वफादार विधायक एकनाथ शिंदे नीत शिवसेना-भाजपा सरकार में शामिल हो गए थे, जिससे राकांपा दो फाड़ हो गई थी। बाद में निर्वाचन आयोग ने अजित के नेतृत्व वाले गुट को असली राकांपा घोषित किया था। अजित ने कहा, मैं अपनी सभी बहनों से प्यार करता हूं। राजनीति को घर-परिवार से बाहर रखना चाहिए। मैंने सुनेत्रा को चुनाव मैदान में अपनी बहन के खिलाफ उतारकर गलती की।

'दो लड़कों' की राजनीतिक ताकत क्या बढ़ी, उप्र में अपराधियों के हौंसले बुलंद हो गए: भाजपा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

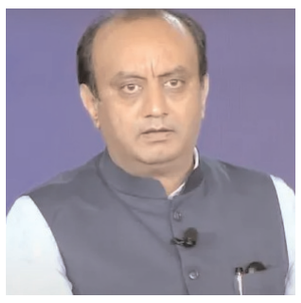

नई दिल्ली/भाषा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और समाजवादी पार्टी (सपा) के मुखिया अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए कहा कि 'दो लड़कों' की राजनीतिक ताकत में जब से इजाफा हुआ है, उत्तर प्रदेश में अपराधियों के हौसले बुलंद हो गए हैं।

भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में सपा पर अपराधियों को पनाह देने का आरोप लगाया और बलात्कार तथा बलात्कार के प्रयास के आरोप में उससे जुड़े दो लोगों की गिरफ्तारी को लेकर यादव नीत पार्टी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि सपा जहां अपराधियों का 'बचाव' कर रही है वहीं विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन के सदस्य अपने गठबंधन सहयोगियों के आपराधिक तत्वों की रक्षा करने में भी एक-दूसरे की मदद कर रहे हैं। त्रिवेदी ने कहा, दो लड़कों से जुड़े लोग अपराध करते रहे हैं। इन दो लड़कों की ताकत बढ़ने के बाद से अपराधियों का दुस्साहस बढ़ रहा है।

ज्ञात हो कि राज्य में 2017 के विधानसभा चुनाव के लिए अखिलेश यादव और कांग्रेस नेता राहुल गांधी के बीच गठबंधन के बाद दोनों की जोड़ी 'उप्र के दो लड़कों' के रूप में प्रसिद्ध हुई थी। हाल के लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश में सपा और कांग्रेस गठबंधन ने भाजपा नीत राजग के मुकाबले बेहतर प्रदर्शन किया था। उन्होंने एक मामले में आरोपियों का दोष साबित करने के लिए डीएनए परीक्षण की सपा की मांग पर तंज कसते हुए कहा कि अपराधियों के साथ खड़े होना यादव की पार्टी के 'डीएनए' में है। भाजपा नेता ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर उनके इस रुख के लिए भी निशाना साधा कि अगर स्थानीय पुलिस ने रविवार तक मामले का हल नहीं निकाला तो वह कोलकाता के एक सरकारी अस्पताल में एक डॉक्टर के बलात्कार और हत्या के मामले को सीबीआई को सौंप देंगी।

मामले की जांच तत्काल सीबीआई को सौंपने की मांग करते हुए त्रिवेदी ने सवाल किया कि क्या इसलिए इतना समय दिया जा रहा है ताकि मामले में हेरफेर किया जा सके। इन अपराधों पर विपक्ष के नेता राहुल गांधी और उनकी बहन प्रियंका गांधी वाद्रा की 'चुप्पी' पर सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के घटक दल ऐसे आपराधिक मामलों में पर्दा डालने का काम कर रहे हैं।

महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान अति-महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दा : मायावती

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ/भाषा। पश्चिम बंगाल के सरकारी मेडिकल कालेज में एक चिकित्सक के साथ कथित दुष्कर्म के मामले में चिंता प्रकट करते हुए उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने यहां कहा कि इस मामले में सभी को जागरूक व सतर्क रहने की जरूरत है, ताकि इस तरह की अति-दुखद और शर्मनाक घटनाएं नहीं होने पाएं। इसके साथ ही बहुजन समाज पार्टी प्रमुख ने यह भी कहा कि ऐसी जघन्य घटनाओं की रोकथाम के लिए केन्द्र एवं संबंधित राज्य सरकारों को कदम उठाने और दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करना चाहिए। बसपा प्रमुख ने पोस्ट में कहा, सरकारी, गैर-सरकारी अथवा जीवन के अन्य किसी भी क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं की सुरक्षा एवं सम्मान आदि से जुड़ा यह अति-महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दा है। इसको लेकर सभी (लोगों) को जागरूक और सतर्क रहने की आवश्यकता है, ताकि बंगाल की महिला चिकित्सक जैसी अति-दुखद और शर्मनाक घटनाओं की पुनरावृति नहीं हो।

अरुणाचल में भाजपा के संगठन को मजबूत किया जाए : अशोक सिंघल

ईटानगर/भाषा। असम के आवास एवं शहरी मामले तथा सिंचाई मंत्री और भाजपा के अरुणाचल प्रदेश प्रभारी अशोक सिंघल ने सोमवार को चीन की सीमा से लगते इस राज्य में जमीनी स्तर पर पार्टी संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया। भाजपा द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि तवांग में संवाद कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए भाजपा के अरुणाचल प्रदेश प्रभारी सिंघल ने कहा कि राज्य और केंद्र सरकार की विभिन्न प्रमुख योजनाएं राज्य में क्रियान्वित की जा रही हैं, लेकिन उचित जानकारी के अभाव में लोग इनका लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में लोगों को जागरूक करने का आग्रह किया तथा उनसे जमीनी स्तर पर सफल कार्यान्वयन के बारे में जानकारी लेने तथा पार्टी और सरकार को 'फीडबैक' देने का अनुरोध किया। सिंघल ने कार्यकर्ताओं से युवाओं से जुड़ने और भाजपा सरकार के सत्ता में आने से पहले और बाद में हुए विकास का तुलनात्मक विश्लेषण करने का भी आग्रह किया। कार्यक्रम में शामिल हुए अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने राज्य के विकास के लिए भाजपा की अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

स्कूल में 23 छात्र-छात्राएं बेहोश हुए

बांदा/भाषा। उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में मंगलवार को एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय में एक-एक करके 23 छात्र-छात्राएं बेहोश हो गए। चिकित्सक के मुताबिक, बारिश के बाद तेज़ धूप के कारण बच्चे बेहोश हुए। बिहारा गांव के पूर्व माध्यमिक विद्यालय (जूनियर हाईस्कूल) के प्रधानाध्यापक राममिलन कुशवाहा ने बताया कि मंगलवार सुबह नियमित समय पर विद्यालय खुला और प्रार्थना के बाद छात्र-छात्राएं अपनी-अपनी कक्षाओं में जाने लगे, तभी एक-एक कर 23 छात्र-छात्राएं बेहोश होकर जमीन पर गिर गए। ये सभी बच्चे छठी, सातवीं और आठवीं के विद्यार्थी हैं। उन्होंने बताया कि सभी बीमार बच्चों को एंबुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां इलाज के बाद वे सभी स्वस्थ हो गए। बच्चों का इलाज करने वाले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शिवरामपुर के चिकित्सक डॉक्टर फूल सिंह ने बताया कि बारिश के बाद निकली तेज़ धूप में प्रार्थना के दौरान काफी देर तक खड़े रहने से बच्चे बेहोश हुए हैं।

खेल मंत्री मांडविया ने कहा, 10 सितंबर से पहले हॉकी टीम से मिलकर भविष्य की योजना बनायेंगे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने मंगलवार को बताया कि वह 10 सितंबर से पहले कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय पुरुष हॉकी टीम के साथ बैठक करेंगे ताकि 2028 लॉस एंजिल्स खेलों में स्वर्ण पदक जीतने के प्रयासों के मद्देनजर भविष्य की योजना बना सकें। उन्होंने मंगलवार सुबह पेरिस से लौटने के बाद स्टार गोलकीपर पीआर श्रीजेश, डिफेंडर संजय, अमित रोहिदास और स्ट्राइकर अभिषेक को सम्मानित किया।

मांडविया ने कहा, आप लोगों का प्रदर्शन शानदार रहा, हम स्वर्ण पदक नहीं जीत पाए, लेकिन हम इसके बहुत करीब पहुंच गए थे और सेमीफाइनल में हार के बाद जिस तरह से आपने प्रदर्शन किया, वह सराहनीय है। उन्होंने कहा, लेकिन यह सफर का अंत नहीं है और मैं 10 सितंबर तक आपके साथ बैठकर भविष्य की रणनीति पर विचार करूंगा ताकि हम लॉस एंजिल्स से स्वर्ण पदक लेकर लौटें। मैं इस बारे में आपकी राय लूंगा कि इसे कैसे आगे बढ़ाया जाए और सरकार की ओर से आपको हर संभव सहायता प्रदान करने का प्रयास करूंगा।

खेल मंत्री ने यह भी कहा कि भारतीय दल भले ही पिछले टोक्यो ओलंपिक के पदकों की बराबरी नहीं कर सका लेकिन वह उनके प्रदर्शन से संतुष्ट हैं। टोक्यो में भारत ने एक स्वर्ण सहित सात पदक जीते थे लेकिन पेरिस में देश केवल छह पदक ही जीत सका जिसमें पांच कांस्य पदक और एक रजत पदक शामिल है।

गोविंदानंद के खिलाफ मानहानि याचिका में शंकराचार्य को अंतरिम राहत देने से अदालत का इंकार

नई दिल्ली/भाषा। दिल्ली उच्च न्यायालय ने उत्तराखंड में ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती को मानहानि मामले में कोई अंतरिम राहत देने से इनकार कर दिया।

अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने स्वामी गोविंदानंद सरस्वती पर उनके बारे में कथित तौर पर ''आपत्तिजनक'' टिप्पणी करने के लिए मानहानि का मुकदमा दायर किया है। न्यायमूर्ति नवीन चावला ने कहा कि प्रथम दृष्टया प्रतीत होता है कि कोई मानहानि नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि इस स्तर पर रोक संबंधी आदेश पारित करना उचित नहीं होगा।

उच्च न्यायालय ने अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती द्वारा दायर अंतरिम राहत अर्जी पर प्रतिवादियों को नोटिस जारी किया और मामले को आगे की कार्यवाही के लिए 29 अगस्त को सूचीबद्ध किया। न्यायाधीश ने कहा, इस तरह की बातें अच्छे अंदाज में नहीं की गई हैं। मुझे लगता है कि वह बस निराश हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई मानहानि हुई है।

अदालत ने अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के वकील से कहा, आपके मुवक्किल संत हैं। आप इस बारे में क्यों चिंतित हैं? संतों को इस सब के बारे में चिंतित नहीं होना चाहिए।

'सेबी प्रमुख की बनाई कंपनी' और ऑडिटर एक ही पते पर पंजीकृत: कांग्रेस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। कांग्रेस ने मंगलवार को दावा किया कि भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड (सेबी) के प्रमुख के रूप में नियुक्ति से पहले माधवी पुरी बुच ने जिस कंसल्टिंग कंपनी की स्थापना की थी, वह और उसका वैधानिक ऑडिटर एक ही पते पर पंजीकृत हैं।

पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह भी कहा कि अदाणी घोटाले और सेबी की कार्यशैली की जांच के लिए संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) की आवश्यकता है। हिंडनबर्ग रिसर्च ने शनिवार को अपनी एक रिपोर्ट में आरोप लगाया था कि सेबी की अध्यक्ष बुच और उनके पति की कथित अदाणी धन हेराफेरी घोटाले में इस्तेमाल किए गए अस्पष्ट 'विदेशी फंड' में हिस्सेदारी थी। सेबी प्रमुख बुच और उनके पति ने एक संयुक्त बयान जारी कर हिंडनबर्ग के आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए इसे पूरी तरह से बेबुनियाद बताया था।

रमेश ने एक बयान में दावा किया, सेबी की प्रमुख माधवी पुरी बुच द्वारा संभावित कदाचार के बारे में और भी सवाल उठ रहे हैं। सेबी प्रमुख के रूप में उनकी नियुक्ति से पहले उनके द्वारा स्थापित एक कंसल्टिंग कंपनी की विनियामक फाइलिंग से पता चलता है कि यह कंपनी और उसके वैधानिक ऑडिटर एक ही पते पर पंजीकृत हैं।

'मणिपुर सरकार हिंसा से विस्थापित लोगों की घर वापसी सुनिश्चित करे'

इंफाल/भाषा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ओकराम इबोबी सिंह ने मंगलवार को मणिपुर की भाजपा नीत सरकार से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि जातीय हिंसा के कारण विस्थापित हुए लोग घर लौट सकें, ताकि राज्य में सामान्य स्थिति बहाल हो सके। प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके सिंह ने कहा कि विपक्षी दल इस प्रक्रिया में सरकार की सहायता करने के लिए तैयार है। अगर राज्य में सरकार है तो उसे कानून और व्यवस्था को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करना चाहिए। उच्चतम न्यायालय ने भी कहा है कि मणिपुर में कानून और व्यवस्था पूरी तरह विफल हो गई है और संवैधानिक तंत्र ध्वस्त हो गया है। सिंह ने कहा, हम केवल यह चाहते हैं कि कानून एवं व्यवस्था को नियंत्रित किया जाए और राज्य के लोगों को शांतिपूर्वक एवं सामान्य रूप से रहने की अनुमति दी जाए।

मैं जिंदगी और क्रिकेट में जोखिम लेना पसंद करता हूं : अश्विन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। इंजीनियर, क्रिकेटर, एक लोकप्रिय यूट्यूबर और अब एक लेखक भी, एक बार में कई चीजों को आसानी से प्रबंधित करने वाले भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने कहा कि जीवन हो या क्रिकेट वह अति सुरक्षात्मक रवैया अपनाने की जगह असफल होना पसंद करेंगे।

इस 37 साल के खिलाड़ी को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे चतुर दिमाग वाले क्रिकेटर के तौर पर जाना जाता है। टेस्ट में 516 विकेट लेने वाले इस खिलाड़ी की बातों और विचारों को क्रिकेट जगत में काफी तवज्जो दी जाती है। वह इस समय अपनी पुस्तक 'आई हैव द स्ट्रीट्स: ए कुट्टी क्रिकेट स्टोरी' की सफलता का लुत्फ उठा रहे हैं। इस किताब के सह-लेखक सिद्धार्थ मोंगा है और इसे पेंगुइन रैंडम हाउस ने प्रकाशित किया है। यह किताब में 2011 तक अश्विन के जीवन का विवरण उनके दिमाग की झलक देती है। अश्विन ने 'पीटीआई-भाषा' को दिए विशेष साक्षात्कार में कहा, मैं अपनी जिंदगी जी रहा हूं, बस यह इतना ही है। मैं 'ए, 'बी' या 'सी' (किसी लक्ष्य) को पूरा करने के बारे में नहीं सोच रहा हूं। मैं मौजूदा समय में रहना पसंद करता हूं। मैं आम तौर पर एक रचनात्मक व्यक्ति हूं और अगर मुझे लगता है कि मैं कुछ करना चाहता हूं, तो मैं आगे बढ़ूंगा और करूंगा। (चाहे यह) सही हो या गलत, यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में मैं बाद में फैसला करना चाहूंगा।

अश्विन हालांकि हमेशा इस तरह से बेखौफ नहीं थे। बचपन में उनके अंदर असुरक्षा की भावना थी लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, वह इससे आगे निकलने में सफल रहे। उन्हें एहसास हुआ कि उनका डर उन्हें पंगु बना रहा था। अश्विन ने कहा कि इससे निपटने के बाद वह कुछ हद तक अडिग हो गए और यह एक क्रिकेटर के रूप में उनके विकास में कारगर रहा। इसने उन्हें एक बच्चे के रूप में चेन्नई की सड़कों पर कैरम बॉल फेंकने से लेकर भारत के प्रमुख स्पिनर के रूप में उनका कायापलट मदद की। इस खिलाड़ी ने आलोचनाओं को गंभीरता से लिया है और ढेर सारे विकेट लेकर इसका जवाब दिया है। उन्होंने हालांकि 'बाहरी शोर' को अपने दिमाग में हावी नहीं होने दिया। उनके अंदर का इंजीनियर उन्हें जोखिम लेने और विफलता से निडर रहने की प्रेरणा देता है। मैं बिल्कुल भी असुरक्षित नहीं हूं। मैं पूरी तरह से सुरक्षित रहने के बजाय जीवन में असफल होना पसंद करूंगा। यही मेरा चरित्र है। मेरे अंदर लोगों जैसी सामान्य असुरक्षा की भावना नहीं हैं। अश्विन इन बातों को उसी साफगोई से कहते हैं जिसके साथ वह जटिल क्रिकेट कानूनों को 'डिकोड' करते हैं। उनकी इन चीजों के सोशल मीडिया पर वायरल होने में देर नहीं लगती। उन्होंने कहा, बचपन में असुरक्षा वाली मानसिकता को पीछे छोड़ने के बाद मेरी सोच बदल गई थी। मैं किसी और की असुरक्षा का फायदा उठाने के बारे में नहीं सोचता हूं। इसी तरह मैं क्रिकेट या जीवन को सामान्य रूप से देखता हूं।

श्रेयस अय्यर बुची बाबू आमंत्रण टूर्नामेंट में मुंबई के लिए एक मैच खेलेंगे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मुंबई/भाषा। श्रेयस अय्यर गुरुवार से तमिलनाडु में चार स्थानों पर शुरू होने वाले आगामी बुची बाबू आमंत्रण टूर्नामेंट में मुंबई के लिए एक मैच के लिए उपलब्ध रहेंगे। अय्यर 27 से 30 अगस्त तक कोयंबतूर में खेले जाने वाले मुंबई के दूसरे दौर के मैच के लिए उपलब्ध रहेंगे।

इस मैच में भारतीय टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव भी खेलेंगे। मुंबई क्रिकेट संघ (एमसीए) के संयुक्त सचिव दीपक पाटिल ने एक विज्ञप्ति में कहा, श्रेयस अय्यर तमिलनाडु क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित बुची बाबू आमंत्रण टूर्नामेंट में मुंबई के लिए खेलेंगे। वह 27 अगस्त से कोयंबतूर में जम्मू-कश्मीर के खिलाफ खेलेंगे। अय्यर ने इस महीने श्रीलंका के खिलाफ एकदिवसीय शृंखला से भारतीय टीम में वापसी की है। बुची बाबू आमंत्रण टूर्नामेंट में मध्य प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, हैदराबाद, बंगाल, मुंबई, जम्मू एवं कश्मीर, झारखंड, छत्तीसगढ़ और गुजरात के साथ टीएनसीए एकादश और टीएनसीए अध्यक्ष एकादश की टीमें भाग लेंगी। लाल गेंद प्रारूप में खेले जाने वाले इस टूर्नामेंट का आयोजन तिरुनेलवेली,

सुविचार

हर एक कहानी खत्म हो जाती है, जिंदगी ऐसी है जहाँ से खत्म होती है, वहीं से एक नई शुरुआत करती है।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

बुरे फंसे फैज हमीद

पाकिस्तान की कुख्यात खुफिया एजेंसी आईएसआई के पूर्व प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल फैज हमीद के कारनामों को देखकर यह तो अंदाजा लगाया जा सकता था कि वे एक दिन 'जरूर फंसेंगे', लेकिन इतने बुरे फंसेंगे, इसकी शायद ही किसी ने कल्पना की होगी। फैज हमीद किसी समय पाकिस्तान में बहुत ताकतवर शख्सियत माने जाते थे। बड़े-बड़े नेताओं, अफसरों और कारोबारियों के बीच उनकी दहशत हुआ करती थी। उन्होंने जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को परवान चढ़ाने की बहुत कोशिशें की थीं। अब उम्र के इस पड़ाव में जाकर पाकिस्तानी फौज ने ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया। न केवल गिरफ्तार कर लिया, बल्कि कोर्ट मार्शल की कार्यवाही भी शुरू कर दी। अगर यह कार्यवाही अपने अंजाम तक पहुंची तो फैज हमीद के पूरे कैरियर पर बट्टा लग जाएगा। उनके कंधों पर जो 'सितारे' लगा करते थे, वे बरसाती पतंगों की तरह उड़ जाएंगे! फैज हमीद एक ऐसे सैन्य अधिकारी रहे हैं, जिन्होंने जम्मू-कश्मीर की शांति में आतंकवाद की आग लगाने की भरपूर कोशिशें की थीं। इसके कारण भारत के कई सैनिकों और आम नागरिकों ने जान गंवाई थी। उन पर कारोबारियों से करोड़ों रुपए की उगाही के आरोप भी लगे हैं। अब उसकी लपटें फैज हमीद तक आ पहुंची हैं, वह भी सेवानिवृत्त होने के लगभग दो साल बाद। निस्संदेह मनुष्य कर्मफल से बच नहीं सकता, चाहे पाकिस्तानी फौज के उच्चाधिकारी ही क्यों न हों, जो ओहदे पर रहते हुए अपनेआप को सर्वशक्तिमान समझने लगते हैं।

आज पाकिस्तानी फौज फैज हमीद के पर कतर रही है तो इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि वह भ्रष्टाचार के मामलों को लेकर सख्ती बरत रही है। पाकिस्तान में फौज के 'कोर' कमांडर को 'करोड़' कमांडर यूं ही नहीं कहा जाता। फैज हमीद भी सेवानिवृत्ति से पहले पेशावर और बहावलपुर में कोर कमांडर रहे हैं। उन्हें सज़ा देकर पाकिस्तानी फौज पूर्व प्रधानमंत्री इमरान ख़ान को कड़ा संदेश देना चाहती है कि अगला नंबर आपका ही है। फैज हमीद और इमरान ख़ान की 'दोस्ती' के किस्से सबको मालूम हैं। फैज चाहते थे कि इमरान उन्हें सेना प्रमुख बनाएं और इमरान चाहते थे कि फैज उनकी कुर्सी सलामत रखें। क्या ही संयोग है कि आज दोनों सलाखों के पीछे हैं। हालांकि बात इतनी-सी नहीं है। फैज हमीद, इमरान की चापलूसी करते हुए उन्हें यह पट्टी पढ़ाने में कामयाब रहे कि वे सेना प्रमुख बनने के बाद भी उनके वफादार रहेंगे। उधर, वे तत्कालीन सेना प्रमुख जनरल क़मर जावेद बाजवा के साथ नजदीकी बढ़ा रहे थे कि उनका नाम आगे बढ़ा दें। यही नहीं, वे अपने एक रिश्तेदार के जरिए शरीफ़ खानदान से संपर्क करने की कोशिश कर रहे थे कि भविष्य में जब सियासी समीकरण बदलें तो उनके सेना प्रमुख बनने की राह खुल जाए। दूसरे शब्दों में कहें तो फैज हमीद 'तीन नावों' में सवार थे और सबके 'चहेते' बनने की कोशिश कर रहे थे। आखिरकार उनकी नाव भंवर में फंसकर हिचकोले खाने लगी। अब कोर्ट मार्शल की घोषणा से तो यही लगता है कि फैज की नाव गहरे समंदर में डूबने वाली है। पाकिस्तानी फौज के इस पूर्व अधिकारी के साथ जो कुछ होने जा रहा है, वह इसके अन्य पदाधिकारियों के लिए एक नजीर भी है, जो एक तरफ तो देशभक्ति की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं, दूसरी तरफ अपने पद का दुरुपयोग करते हुए खूब भ्रष्टाचार भी करते हैं। पिछले दिनों पाक फौज के पूर्व ब्रिगेडियर इम्तियाज का मामला सुर्खियों में रहा था, जो अपने कारनामों के लिहाज से फैज हमीद के 'उस्ताद' माने जा सकते हैं। उन्हें ज़िंदगी के आखिरी दिनों में उस दौलत से महरूम होना पड़ा, जो उन्होंने आतंकवाद और भ्रष्टाचार से जोड़ी थी। सच है, बुरे कर्मों का नतीजा बुरा ही होता है।

ट्वीटर टॉक

आज जोधपुर एयरपोर्ट से कल्याणपुर नागाणा धाम पहुंचकर माँ नागणेच्या माता जी के दर्शन किए। माँ नागणेच्या से देश-प्रदेश में खुशहाली की कामना की। शेरगढ़ विधायक श्री बाबू सिंह राठौड़, समाजसेवी श्री उम्मेद सिंह अराबा भी साथ रहे।

-गजेन्द्र सिंह शेखावत

प्रदेश भर में जारी बारिश के बीच मौसम विभाग ने आज अलग-अलग जिलों में ऑरेंज अलर्ट (दौसा, सवाई माधोपुर, जयपुर, जयपुर शहर, टोंक) और येलो अलर्ट (पाली, नागौर, चूरू, भरतपुर, अलवर, नागौर, सीकर, करौली, अजमेर, बीकानेर) की चेतावनी जारी की है।

-दीया कुमारी

लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर जी ने देश के चारों दिशाओं में सनातन तीर्थस्थलों की स्थापना की। इससे देशभर में लोगों के सांस्कृतिक व आध्यात्मिक चेतना को बल मिलने के साथ सामाजिक एकजुटता को भी अभूतपूर्व आकार मिला।

-जेपी नड्डा

प्रेरक प्रसंग

करनी की भरनी

एक आर्किटेक्ट एक बिल्डर्स कंपनी में बहुत सालों से अच्छा काम कर रहा था। एक दिन कंपनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्ज ने उसे बुलाया और उसको एक मकान का नक्शा देते हुए कहा कि वह शहर के किसी बढ़िया से बढ़िया क्षेत्र में एक भूखंड लेकर उसमें बहुत भव्य मकान बनाए। मकान में बेहतर से बेहतर भवन सामग्री का उपयोग किया जाए और इस बात का खास ख्याल रखा जाए कि मकान का निर्माण अच्छे कारीगरों से करवाया जाए। व्यय की चिंता करने की कतई कोई जरूरत नहीं है। पता नहीं क्यों एकाएक आर्किटेक्ट के मन में कुछ बेईमानी आ गई और उसने बंगला बनवाने के लिए अकुशल कारीगर काम में लगाए।

भवन सामग्री भी निम्न से निम्न स्तर की लेकर अपने लिए बहुत सारा धन बचा लिया। इस प्रकार मकान बनकर खड़ा हो गया। मकान के बनने पर बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्ज के चेयरमैन ने आर्किटेक्ट को बोर्ड के सामने प्रस्तुत करके उसके इतने वर्ष के अच्छे कार्यों की तारीफ की और वह मकान उसी को पुरस्कार स्वरूप भेंट कर दिया।

सामयिक

देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करता 'हर घर तिरंगा'

योगेश कुमार गोयल

फोन: 9416740584.

भारत की आजादी के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में वर्ष 2022 में लोगों को अपने घर पर तिरंगा झंडा फहराने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु आजादी के अमृत महोत्सव' के तत्वाधान में हर घर तिरंगा' अभियान चलाया गया था। उस अभियान के दौरान देशवासियों में अभूतपूर्व जोश देखने को मिला था और देखते ही देखते वह एक जन आन्दोलन बन गया था। दरअसल उससे पहले राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के साथ हमारा संबंध व्यक्तिगत के बजाय केवल औपचारिक और संस्थागत रूप में अधिक रहा था, इसीलिए भारत सरकार द्वारा यह पहल लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना जागृत करने और भारत के राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए की गई थी। इस वर्ष 9 अगस्त से शुरू हुआ हर घर तिरंगा' अभियान 15 अगस्त तक चलेगा। इस पहल का उद्देश्य प्रत्येक भारतीय को तिरंगा फहराने के लिए प्रोत्साहित करके भारत के नागरिकों में देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करना है। 140 करोड़ भारतवासियों की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा प्रत्येक भारतीय की भावनाओं और मानस में अद्वितीय और विशेष स्थान रखता है। हालांकि तिरंगे के उपयोग और उसे फहराने को लेकर कुछ निर्देश होते हैं, जिसके आधार पर तिरंगा फहराने का नियम तय होता है, जिसे फ्लैग कोड ऑफ इंडिया 2002' कहा जाता है। यह संहिता राष्ट्रीय ध्वज से जुड़े सभी कानूनों, परंपराओं, प्रथाओं और निर्देशों को एक साथ लाती है।

राष्ट्रीय ध्वज की 'एक ध्वज संहिता' है और इसे फहराना किसी आम ध्वज के फहराने जैसा नहीं है, इसलिए इस ध्वज संहिता की जानकारी प्रत्येक नागरिक को होनी जरूरी है ताकि हमारे राष्ट्रीय ध्वज का किसी भी तरह से कोई अपमान न हो। 26 जनवरी 2002 से भारत में भारतीय झंडा संहिता 2002' लागू की गई थी, जिसके तहत भारतीय झंडा संहिता को तीन भागों में बांटा गया। पहले भाग में राष्ट्रीय ध्वज का सामान्य विवरण शामिल है जबकि दूसरे भाग में आम लोगों, शैक्षिक संस्थाओं और निजी संगठनों के लिए झंडा फहराए जाने से संबंधित दिशा-निर्देश हैं और तीसरे भाग में राज्य और केंद्र सरकार, उनके संगठनों के लिए दिशा-निर्देश दिए गए हैं। भारतीय झंडा संहिता 2002' में यह स्पष्ट उल्लेख है कि तिरंगे का इस्तेमाल व्यवसायिक उद्देश्यों के लिए नहीं किया जा सकता, किसी उत्सव के रूप में या किसी भी तरह के सजावट के प्रयोजनों के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता। किसी आधिकारिक प्रदर्शन के कारण केवल भारतीय मानक ब्यूरो के निर्देशित विनिर्देशों के अनुरूप चिह्न वाले झंडे का ही इस्तेमाल किया जा सकता है। 'भारतीय झंडा संहिता 2002' के नियमों के अनुसार तिरंगे को केवल सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच ही फहराने का नियम था। 2022 में आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर पहली बार शुरू किए गए 'हर घर तिरंगा' अभियान के साथ ही गृह मंत्रालय ने भारतीय ध्वज संहिता 2002 में संशोधन किया ताकि रात में भी राष्ट्रीय ध्वज को फहराया जा सके और ज्यादा से ज्यादा लोगों को अपने घर पर झंडा फहराने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। 30 दिसंबर 2021 के आदेश के जरिये भारत ध्वज संहिता, 2002 को संशोधित किया गया और इस संशोधन के जरिये पॉलिएस्टर तथा मशीन से बने झंडे को भी अनुमति दी गई, जिसके बाद राष्ट्रीय ध्वज हाथ से काते, हाथ से बुने हुए या मशीन से बने कपास, पॉलिएस्टर, ऊन, रेशम या खादी से भी बनाए जाने लगे। 20 जुलाई 2022 को एक अन्य संशोधन के तहत केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय ध्वज को दिन के साथ-साथ रात में भी फहराने की अनुमति प्रदान कर दी लेकिन इसके साथ यह नियम भी लागू किया गया कि रात में भी झंडा फहराने की अनुमति तभी होगी, जब झंडा किसी खुले स्थान पर किसी के घर पर फहराया जाए।

भारतीय ध्वज संहिता 2002 को संशोधित करने के 19 जुलाई 2022 के आदेश में स्पष्ट किया गया कि राष्ट्रीय ध्वज किसी भी आकार का हो सकता है लेकिन यह आयताकार ही होगा और इसकी लंबाई तथा ऊंचाई का अनुपात 3:2 होगा। झंडे की तीनों पट्टियों की चौड़ाई और लंबाई बराबर होनी चाहिए। जब भी राष्ट्रीय ध्वज प्रदर्शित किया जाएगा, उसे पूरा सम्मान देना होगा और उसे प्रत्यक्ष रूप से यथोचित स्थान पर रखा जाएगा। क्षतिग्रस्त अथवा मैला-कुचैला ध्वज प्रदर्शित नहीं किया जाएगा। ध्वज को किसी भी अन्य ध्वज या ध्वजों के साथ एक साथ एक ही स्तंभ पर नहीं फहराया जाएगा। कोई भी अन्य ध्वज या ध्वजपट राष्ट्रीय ध्वज से ऊपर या साथ-साथ नहीं रखा जाएगा। राष्ट्रीय ध्वज को किसी अन्य ध्वज या झंडे के साथ मस्तूल शिखर (झंडे के स्तंभ के शीर्ष भाग) पर नहीं फहराया जाना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज को उल्टे तरीके से प्रदर्शित नहीं किया जाएगा और ध्वज का केसरिया हिस्सा नीचे नहीं होना चाहिए।

ध्वज संहिता के अनुसार राष्ट्रीय ध्वज किसी भी व्यक्ति या चीज की सलामी में नहीं झुकाया जाएगा। ध्वजारोहण के दौरान कोई फूल अथवा माला या प्रतीक सहित कोई भी वस्तु, जिससे राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है, ऊपर रखी जाएगी। राष्ट्रीय ध्वज का उपयोग तोरण, फुंदने, ध्वजपट या अन्य किसी तरह की सजावट के लिए नहीं किया जाएगा। राष्ट्रीय ध्वज को जमीन या फर्श अथवा पानी में स्पर्श की अनुमति नहीं दी जाएगी। राष्ट्रीय ध्वज क्षतिग्रस्त होने की स्थिति में इसे प्रदर्शित या लगाया नहीं जाएगा। राष्ट्रीय ध्वज का उपयोग वक्ता द्वारा मेज को ढ़कने के लिए नहीं किया जाएगा, न ही वक्ता के मंच को इससे लपेटा जाएगा। राष्ट्रीय ध्वज का उपयोग किसी भी पोशाक या वर्दी अथवा किसी पहनावे के हिस्से में चित्रित नहीं किया जाएगा, जो किसी भी व्यक्ति के कमर के नीचे पहना जाता है और न ही कुशन, रूमाल, नैपकिन, अंतःवस्त्र अथवा किसी कपड़े में कढ़ाई या मुद्रित रूप में किया जाएगा। राष्ट्रीय ध्वज का उपयोग वस्तुओं को लपटने, प्राप्त करने और वितरित करने के लिए नहीं किया जाएगा। इसका उपयोग किसी वाहन के किनारों, पृष्ठ भाग या शीर्ष भाग को ढ़कने के लिए भी नहीं किया जा सकता।

राष्ट्रीय सम्मान के अपमान की रोकथाम अधिनियम, 1971 के अनुसार राष्ट्रीय ध्वज का उपयोग निजी अंत्येष्टि को लपेटने के साथ ही किसी भी तरह की चीजों को लपेटने के लिए नहीं किया जाएगा। भारत सरकार द्वारा निर्देशित अवसरों को छोड़कर राष्ट्रीय ध्वज को आधा झुका हुआ नहीं फहराया जा सकता। भारतीय ध्वज संहिता के पैरा 2-2 के अनुसार, यदि राष्ट्रीय ध्वज क्षतिग्रस्त हो जाता है तो राष्ट्रीय ध्वज की गरिमा को ध्यान में रखते हुए उसे जलाकर अथवा किसी अन्य विधि द्वारा पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाएगा। यदि राष्ट्रीय ध्वज कागज से बना हो, जिसे आम जनता द्वारा लहराया जाता है तो इन झंडों को जमीन पर नहीं छोड़ा जाना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज की गरिमा को ध्यान में रखते हुए उन्हें निजी तौर पर नष्ट कर दिया जाना चाहिए।

मंथन

अखंड भारत ही बनेगा विश्व गुरु

सुरेश हिन्दुस्थानी

मोबाइल : 9770015780

वर्तमान में जब कहीं से भी देश को तोड़ने की बात आती है तो स्वाभाविक रूप से उसका प्रतिकार भी जबरदस्त तरीके से होता है। यह प्रतिकार निश्चित रूप से उस राष्ट्रभक्ति का परिचायक है, जो इस भारत देश को देवभूमि भारत के रूप में प्रतिस्थापित करने का प्रमाण प्रस्तुत करने का अतुलनीय सामर्थ्य रखती है। यह आज के समय की बात है, लेकिन हम उस काल खंड का अध्ययन करें, जब भारत के विभाजन हुए। उस समय के भारतीयों के मन में विभाजन का असहनीय दर्द हुआ। जो असहनीय पीड़ा के रूप में उनके जीवन में प्रदर्शित होता रहा और देश को जगाते जगाते वे परलोक गमन कर गए। अभी तक भारत देश के सात विभाजन हो चुके हैं। जरा कल्पना कीजिए कि अगर आज भारत अखंड होता तो वह दुनिया की महाशक्ति होता। उसके पास मानव के रूप में जनशक्ति का प्रवाह होता। लेकिन विदेशी शक्तियों ने भारत के कुछ महत्वाकांक्षी शासकों को प्रलोभन देकर भारत पर एकाधिकार किया और योजना पूर्वक भारत को कमजोर करने का प्रयास किया। आज जिस भारत की तस्वीर हम देखते हैं, वह अंग्रेजों और उन जैसी मानसिकता रखने वाले लालची भारतीयों द्वारा किए गए कुकृत्यों का परिणाम ही है, लेकिन आज भी भारत में एक वर्ग ऐसा भी है, जिनकी आंखों में अखंड भारत का सपना है। उनके मन में अखंड भारत बनाने का संकल्प है। इसी संकल्प के आधार पर वे सभी इस दिशा में सार्थक प्रयास भी कर रहे हैं।

भारत के मनीषी और राष्ट्र के साथ एकात्म भाव रखने वाले महर्षि अरविंद ने विभाजन के असहनीय दर्द को आम जन की दृष्टि से देखने का आध्यात्मिक प्रयास किया। तब उनकी आंखों के सामने अखंड भारत का स्वरूप दिखाई दिया। योगीराज महर्षि अरविंद ने 67 वर्ष पूर्व 1957 में कहा था कि देर कितनी भी हो जाए, पाकिस्तान का विघटन और उसका भारत में विलय होना निश्चित है। राष्ट्र के प्रति इसी प्रकार का एकात्म भाव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी के जीवन में भी दृष्टव्य होता रहा। वे अपने शरीर को भारत देश की प्रतिकृति ही मानते थे। जब भी देश पर कोई संकट आता था, तब उनके शरीर में वैसा ही कष्ट होता था। इसलिए कहा जा सकता है कि उनको राष्ट्र की समस्याओं का पूर्व आभास भी होता था। जहां तक अखंड भारत की बात है तो यह मात्र कहने भर के लिए ही नहीं, बल्कि एक शाश्वत विचार है, जो आज भी भारत की हवाओं में गुंजायमान होता रहता है।

विचार करने वाली बात यह भी है कि जब भारत देश के टुकड़े नहीं हुए थे, तब हमारा देश पूरे विश्व में ज्ञान का आलोक प्रवाहित कर रहा था। विश्व का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान भारत के संत मनीषियों के पास विद्यमान था। इसलिए भारत के सिद्ध संत केवल भारत के संत न होकर जगद्गुरु के नाम से विख्यात हुए। उनकी दृष्टि में पूरा विश्व एक परिवार की तरह ही था। लेकिन ऐसा क्या हुआ कि भारत कई बार विभाजित होता रहा और आज जो भारत दिखाई देता है, वह भारत का एक टुकड़ा भर है।

भारत के विभाजन का अध्ययन किया जाए तो हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि यह विभाजन भारत की भूमि के टुकड़े करके ही हुए हैं। जिस भारत को हम माता के स्वरूप में पूजते आए हैं, उसे कम से कम वे लोग तो स्वीकार नहीं कर सकते, जो भारत की भक्ति में लीन हैं। इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है कि महाभारत कालीन गांधार देश यानी आज का अफगानिस्तान वर्ष 1747 में भारत से अलग हो गया। इसी प्रकार 1768 से पूर्व नेपाल भी भारत का अंग ही था। 1907 में भारत से अलग होकर भूटान देश बना। 1947 में पाकिस्तान का निर्माण हुआ। 1948 में श्रीलंका अस्तित्व में आया। इसी प्रकार पाकिस्तान के साथ अलग हुए बांगलादेश 1971 में एक अलग देश के रूप में स्थापित हुआ। जरा विचार कीजिए ये सभी देश आज भारत का हिस्सा होते तो भारत की शक्ति कितनी होती? आज कोई अखंड भारत की बात करता है तो कई लोग इसे असंभव कहने में संकोच नहीं करते। यहां पहली बात तो यह है कि हम किसी देश को छीनने की बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपने देश के विभाजित भाग को भारत में मिलाने की ही बात कर रहे हैं। कभी भारत के हिस्से रहे देश को भारत में मिलाने की बात करना असंभव नहीं माना जा सकता। आज धीरे ही सही, लेकिन भारत उस दिशा की ओर प्रवृत हुआ है। जबकि जो देश भारत से अलग हुए हैं, उनमें से अधिकांश देश बहुत बुरे दौर से गुजर रहे हैं। श्रीलंका की स्थिति सबके सामने आ चुकी है। पाकिस्तान भी उसी राह पर बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। बांगलादेश में भुखमरी के हालात हैं। अफगानिस्तान खौफ के वातावरण में जी रहा है। सवाल यह उठता है कि इन देशों को भारत से अलग होने के बाद क्या मिला? कुछ नहीं।

वर्तमान में भारत में राष्ट्रीय एकता का भाव भी है तो भारत की संस्कृति का प्रवाह भी। भारतीय संस्कृति सबको जोड़ने का प्रयास करती है, जबकि अन्य संस्कृति में विश्व बंधुत्व का भाव नहीं है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति के माध्यम से पूरे विश्व को एक ऐसी दिशा का बोध कराया जा सकता है, जहां शांति भी है और प्रगति के रास्ते भी हैं। अब इस दिशा में और अधिक तेजी से कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए अब समय अनुकूल है। इसलिए सभी भारतीय नागरिक इस दिशा में आगे आकर उस प्रवाह में शामिल होने का प्रयास करें, जो भारत को अखंड बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। अखंड भारत की संकल्पना जहां भारत को ठोस आधार प्रदान करने में सहायक होगा, वहीं यही आधार भारत को पुन: विश्व गुरु के सिंहासन पर आसीन करेगा, यह तय है।

नजरिया

सियासी शिगूफों के बीच मोदी की लोकप्रियता कायम

बाल मुकुन्द ओझा

मोबाइल : 9414441218

देश की मीडिया में आजकल मोदी के उत्तराधिकारी को लेकर चर्चाओं और शिगूफों का बाजार गर्म हो रहा है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के संघ से संबंधों, अगले साल 75 साल पूरे होने और लोकसभा चुनावों में भाजपा को अकेले पूर्ण बहुमत हासिल नहीं करने को लेकर देश ही नहीं वैश्विक मीडिया में भी लगातार बहस छिड़ी हुई है। लोग तरह तरह के अनुमान लगा रहे है। अफवाहों ने भी जोर पकड़ रखी है। बताया जा रहा है राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने 2013 में वरिष्ठ नेता लाल कृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी को घर बैठाकर गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी को तरजीह दी थी। संघ को अपने इस कार्य में अपेक्षित सफलता मिली और मोदी ने देखते देखते देश की कमान संभाल ली। इस साल उन्होंने तीसरी बार देश के प्रधान मंत्री का पदभार संभाला है। भाजपा ने 2014 में 282 और 2019 में 303 सीटों पर जीत दर्ज की थी। इस जीत का समूर्ण श्रेय मोदी को दिया गया। मगर 2024 के चुनावों में 240 सीटें मिलने के बाद मोदी के नेतृत्व पर सवाल उठने शुरू हो गए। इस चुनाव में मोदी ने 400 पार का नारा दिया था। सरकार की बात करें तो मोदी के नेतृत्व में एनडीए ने सरकार बनाने में सफलता हासिल की है। हालांकि मोदी की लोकप्रियता अभी भी कायम है और मोदी का कोई विकल्प हाल फिलहाल दूर दूर तक दिखाई नहीं दे रहा है। मगर सियासत की फुलझड़ियां कभी बुझती नहीं है। राजनीतिक क्षेत्रों में कहा जा रहा है संघ ने अपनी दूरगामी नीतियों को अमलीजामा पहनाना शुरू कर दिया है। संघ ने कभी मोदी को लेकर सार्वजनिक रूप से कोई टीका टिपण्णी नहीं की है। कई बार संघ प्रमुख और अन्य नेता देश की विभिन्न समस्याओं को लेकर अपने बयान देते है जिसे कुछ लोग सरकार या मोदी से जोड़कर देखते है। मोदी की लोकप्रियता को लेकर कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सर्वे हो चुके हैं। हाल ही के एक सर्वे में भाग लेने वाले लोगों में से 52.5 प्रतिशत लोगों ने प्रधानमंत्री के लिए अगली बार भी नरेंद्र मोदी का ही समर्थन किया है । वहीं मोदी के उत्तराधिकारी को लेकर भी कई नामों पर सर्वे हुआ है। इसके साथ ही मीडिया में मोदी का उत्तराधिकारी कौन होगा इस पर चर्चा शुरू हो गई है। योगी आदित्यनाथ, अमित शाह, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी का नाम लिया जाने लगा है। इसी बीच संघ के एक उच्च स्तरीय सूत्र ने शिवराज सिंह को मोदी के उत्तराधिकारी के रूप में स्थापित करने के संकेत दिए है। शिवराज संघ के अनुशासित कार्यकर्त्ता और लोकप्रिय शासक के रूप में अपनी पहचान बनाये हुए है। संघ उनमें अपार संभावनाएं तलाश रहा है। कुछ सियासी समीक्षक इसे दूर की कोड़ी बता रहे है और कह रहे है मोदी 2029 के चुनाव का भी नेतृत्व करेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

गौतलब है जून 2013 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी की और से मोदी को प्रधानमंत्री उम्मेदवार घोषित किया गया। नरेंद्र मोदी ने 2014 में और फिर 2019 में भारतीय जनता पार्टी की प्रभावशाली जीत का नेतृत्व किया। मोदी के बारे में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि वह पहली बार विधायक के रूप में गुजरात के मुख्यमंत्री बने। इसी तरह वह पहली बार सांसद के रूप में सीधे भारत के प्रधान मंत्री बने। मुख्यमंत्री से प्रधानमंत्री तक 25 साल का बेमिसाल सफर पूरा करने वाली यह शख्सियत नरेन्द्र दामोदर दास मोदी आज ग्लोबल लीडर के रूप में अपनी पहचान कायम करने में सफल हुए है। मोदी ने कश्मीर में एक ध्वज, एक निशान और एक संविधान का जनसंघ के पितृ पुरुष का सपना साकार किया। मोदी ने अनेक ऐतिहासिक कार्यों को अंजाम देकर मोदी है तो मुमकिन है की अपनी छवि बनाई। मोदी संघ के एक विनम्र स्वयं सेवक की तरह देश की नब्ज को पहचानने में सफल हुए।

प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्होंने अनेक गरीब कल्याण और विकास की योजनाओं का सञ्चालन किया जिनमें स्वच्छ भारत अभियान, प्रधानमंत्री जन धन योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वाला योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, गरीब कल्याण योजना, गरीब कल्याण योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, डिजिटल इंडिया प्रोग्राम के अलावा नमामि गंगे, बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना, सर्व शिक्षा अभियान, स्टैंड अप इंडिया आदि मुख्य है। कश्मीर का विशेष राज्य का दर्जा खत्म करने, अल्पसंख्यकों की कुप्रथा तीन तलाक का खात्मा, पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक, गरीब सवर्णों के लिए 10 फीसदी आरक्षण का प्रावधान और नागरिकता संशोधन कानून का ऐतिहसिक फैसला मोदी सरकार की विशेष उपलब्धि है।

महत्त्वपूर्ण

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006. Editor : Bhupendra Kumar (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar. Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any suchmanner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.**Regn No.RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टैंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता।– **दक्षिण भारत राष्ट्रमत**

यूनुस ने बांग्लादेशी हिंदुओं से मुलाकात की

ढाका/भाषा। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस ने परेशान हिंदू समुदाय के सदस्यों से मंगलवार को यहां प्रसिद्ध ढाकेश्वरी मंदिर में मुलाकात की और उनकी सरकार की भूमिका के बारे में कोई धारणा बनाने से पहले धैर्य रखने का आग्रह किया।

यूनुस ने अल्पसंख्यकों के खिलाफ जारी हिंसा और बर्बरता के बीच आठ अगस्त को अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार के रूप में कार्यभार संभाला था। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार सुनिश्चित किए जाने चाहिए। उन्होंने देश की दुर्दशा के लिए संस्थागत पतन को जिम्मेदार ठहराया। यह बैठक पांच अगस्त को प्रधानमंत्री शेख हसीना के पद से हटने के बाद कई दिनों तक चली हिंसा में अल्पसंख्यक हिंदू लोगों पर हमले, उनकी संपत्तियों की तोड़फोड़ तथा कई हिंदू मंदिरों को नष्ट किए जाने के बाद हो रही है।

ढाकेश्वरी मंदिर प्रमुख शक्तिपीठों में से एक है।

'डेली स्टार' अखबार ने युनूस को उद्धृत करते हुए कहा, अधिकार सबके लिए समान हैं। हम सब एक ही व्यक्ति हैं और हमारे पास एक ही अधिकार है। हमारे बीच कोई भेदभाव न करें। कृपया हमारी सहायता करें। धैर्य रखें और बाद में आकलन करें – हम क्या कर पाए और क्या नहीं। अगर हम असफल होते हैं, तो हमारी आलोचना करें।

अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय के हजारों सदस्यों ने शुक्रवार और शनिवार को बांग्लादेश की राजधानी ढाका और उत्तर-पूर्वी बंदरगाह शहर चटगांव में बड़े पैमाने पर विरोध रैलियां निकालीं और देश भर में हुई बर्बरता के बीच सुरक्षा की मांग की। हिंसा के दौरान हिंदू समुदाय के मंदिरों और उनके घरों पर हमले किए गए थे।

अल्पसंख्यकों पर अत्याचार करने वालों के खिलाफ मुकदमों की सुनवाई में तेजी लाने के लिए विशेष न्यायाधिकरणों की स्थापना, अल्पसंख्यकों के लिए 10 प्रतिशत संसदीय सीटों का आवंटन, अल्पसंख्यक संरक्षण कानून लागू करने आदि की मांग करते हुए हिंदू प्रदर्शनकारियों ने शनिवार को मध्य ढाका के शाहबाग में तीन घंटे से अधिक समय तक यातायात अवरुद्ध कर दिया।

स्वतंत्रता सेनानी कृष्णानंद उप्रेती की संघर्षभरी जीवनगाथा लोगों के लिए प्रेरणास्रोत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

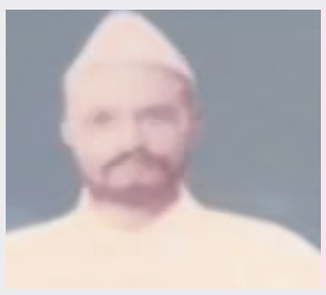

उप्रेती के प्रयासों से ही 1928 में पिथौरागढ़ में पहला हाईस्कूल खुला। उप्रेती ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी सक्रिय रूप से हिस्सा लिया जिसके लिए उन्हें 1930 में अल्मोड़ा जेल में छह माह की सजा काटनी पड़ी।

पिथौरागढ़/भाषा। उत्तराखंड के सीमांत पिथौरागढ़ जिले के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी दिवंगत कृष्णानंद उप्रेती के देश की आजादी में दिए गए योगदान से लोगों को परिचित कराने के लिए केंद्र सरकार ने उनकी जीवनगाथा जारी की है।

भारत के 78 वें स्वतंत्रता दिवस से पूर्व स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के योगदान पर जारी शृंखला की पहली कड़ी में कृष्णानंद उप्रेती को शामिल किया गया है।

उप्रेती के पौत्र राजेश मोहन उप्रेती ने इस पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस जिले की अत्यधिक प्रभावशाली हस्तियों में शुमार उनके दादा ने इस दूरस्थ क्षेत्र में कांग्रेस का पहला कार्यालय खोला था और कुली बेगार प्रथा को समाप्त करने में अहम भूमिका निभाई थी।

वर्ष 1895 में पिथौरागढ़ शहर के निकट हुड़ेती गांव में जन्मे उप्रेती राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के करिश्माई व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे। इस बारे में राजेश मोहन ने कहा, उन्होंने न केवल 1920 में कांग्रेस की सदस्यता ली बल्कि 1921 में हुड़ेती गांव में अपने मकान में कांग्रेस का पहला कार्यालय भी खोला। पिथौरागढ़ के एक सरकारी स्कूल में अध्यापक राजेश मोहन ने कहा कि इसके बाद क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों ने मिलकर हमारे गांव में एक सम्मेलन किया और वे उप्रेती के नेतृत्व में एकजुट होना शुरू हुए। उन्होंने कहा कि सूर घाटी में कांग्रेस का पहला कार्यालय खुलने के बाद पिथौरागढ़ के कई स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों जैसे प्रयागदत्त पंत, लक्ष्मण सिंह महर, दुर्गादत्त जोशी, जमन सिंह वल्दिया आदि ने गांधीजी के आह्वान पर लोगों को ब्रिटिश राज के खिलाफ संगठित करना शुरू किया।

बद्री दत्त पांडे के नेतृत्व में संचालित आंदोलन के कारण 1921 में समाप्त हुई कुली बेगार प्रथा, जिसे कुली उत्तराखंड या कुली बरदैस के नाम से भी जाना जाता है, में भी उप्रेती का अहम योगदान रहा। इस प्रथा के तहत कुमांउ क्षेत्र के गांवों में रहने वाले लोगों को बिना किसी भुगतान के ब्रिटिश अधिकारियों के सामान की ढुलाई करने के लिए मजबूर किया जाता था।

कृष्णानंद की जीवगाथा के अनुसार, उप्रेती ने पिथौरागढ़ में बड़ी संख्या में लोगों को कुली बेगार प्रथा के खिलाफ संगठित किया और आंदोलन में बढ़चढ़कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने 13 और 21 फरवरी 1921 को पिथौरागढ़ और गंगोलीहाट में जनसभाएं कर इस अपमानजनक प्रथा के विरुद्ध भाषण दिए और उन्हें जागरूक किया।

कुली बेगार आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए उप्रेती को एक मार्च 1922 को छह माह के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई थी। राजेश मोहन ने कहा कि उप्रेती ने न केवल आजादी के आंदोलन में बल्कि ब्रिटिश अधिकारियों की शोषण और दमनात्मक नीतियों के विरुद्ध सामाजिक सुधार और वन आंदोलनों में भी बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। उन्होंने बताया कि स्थानीय लोगों के पारंपरिक वन अधिकारों के लिए संघर्ष करने के कारण 1923 में उन्हें फिर तीन माह के लिए कारावास की सजा सुनाई गई। राजेश मोहन ने कहा कि उस समय के अन्य गांधीवादी नेताओं की तरह उप्रेती भी जमींदारों द्वारा आम जनता पर अत्याचारों के विरुद्ध थे। इस संबंध में उन्होंने कहा कि जब लोगों ने कृष्णानंद उप्रेती से अस्कोट के राजबर द्वारा आम किसानों पर अत्याचारों की शिकायत की तो वह जमींदारों के खिलाफ खड़े हो गए और संघर्ष छेड़ दिया। उन्होंने कहा कि इस संघर्ष की परिणिति यह हुई कि जमींदार को अपने रुख से पीछे हटना पड़ा। उप्रेती के प्रयासों से ही 1928 में पिथौरागढ़ में पहला हाईस्कूल खुला। उप्रेती ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी सक्रिय रूप से हिस्सा लिया जिसके लिए उन्हें 1930 में अल्मोड़ा जेल में छह माह की सजा काटनी पड़ी। देश की आजादी के लिए संघर्ष करने के बावजूद उप्रेती आजादी का सूरज नहीं देख पाए और 1937 में 42 साल की उम्र में दुनिया से विदा हो गए।

खेती के गुर सीखती नजर आई मृणाल ठाकुर

अजमेर/एजेन्सी

फिल्म अभिनेत्री मृणाल ठाकुर ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट में मिट्टी के बर्तन बनाते हुए कई वीडियो शेयर किए। इस वीडियो में वह मिट्टी के बर्तन बनाने की कला सीख रही हैं। वह चाक पर दोनों हाथों से सनी हुई मिट्टी से बर्तनों को आकार देती नजर आ रही हैं। वीडियो में अभिनेत्री बिना मेकअप के पूरी तरह से काले रंग की एक खूबसूरत ड्रेस और ढीले पोनीटेल में बंधे बालों के साथ काफी खूबसूरत दिख रही हैं। अभिनेत्री मृणाल ठाकुर ने कुछ दिन पहले खेती करने की इच्छा जताई थी। अब इस वीडियो के वायरल होने के बाद इसे उनके 'भविष्य की किसान' बनने की दिशा में पहला कदम बताया जा रहा है। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी में अपने इस प्रशिक्षण की झलक लोगों के साथ साझा की है। मृणाल के इंस्टाग्राम पर 13.3 मिलियन फॉलोअर्स हैं। साथ ही एक अन्य वीडियो में मृणाल स्टार फ्रूट के खेत में घूमते हुए यह कर रही हैं, हे भगवान...हम लोग यह स्कूल में खाते थे...वाह, कितना स्वादिष्ट है। उन्होंने इंस्टाग्राम पर इस पोस्ट को हैशटैग फ्यूचर फार्मर के कैप्शन लगाकर लोगों के साथ साझा किया। एक न्यूज़ पोर्टल को दिए इंटरव्यू में मृणाल ने बताया था कि वह अपने पैसे को खाद्य, पौधों, और खेती के लिए उपयुक्त भूमि पर निवेश करना चाहती हैं। इसके अलावा एक दूसरी स्टोरी में मृणाल ने सफेद एथनिक कुर्ता पहनकर, तमिलनाडु के कोयंबटूर में आदियोगी शिव की मूर्ति के सामने पोज देते हुए एक तस्वीर साझा की।

रिहर्सल

अमृतसर में मंगलवार को 78वें स्वतंत्रता दिवस समारोह से पहले फुल ड्रेस रिहर्सल के दौरान पारंपरिक पंजाबी पोशाक पहने छात्र।

युद्धक्षेत्र की चुनौतियों को समझने के लिए सामूहिक दृष्टिकोण की आवश्यकता : जनरल मनोज पांडे

चंडीगढ़/भाषा। पूर्व सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने युद्ध के मैदान में चुनौतियों को समझने और उनका कुशलतापूर्वक सामना करने हेतु प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण का उपयोग करने के लिए सामूहिक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिया है। जनरल मनोज पांडे ने मंगलवार को यहां चंडीमंदिर सैन्य स्टेशन पर 'युद्धक्षेत्र में सफलताएं : विजय के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग' विषय पर आयोजित एक संगोष्ठी में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए यह बात कही।

जनरल पांडे ने युद्धक्षेत्र में चुनौतियों को समझने तथा कुशलतापूर्वक उनका सामना करने हेतु प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण का उपयोग करने के लिए सामूहिक दृष्टिकोण पर बल दिया। पश्चिमी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ (जीओसी-इन-सी) लेफ्टिनेंट जनरल मनोज कुमार कटियार ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि सेना को अधिक अनुकूलनीय बनने का प्रयास करना चाहिए और अधिकारियों से आग्रह किया कि वे प्रौद्योगिकी क्षेत्र में गहन अध्ययन करें तथा नई पीढ़ी की युद्ध संबंधी चुनौतियों के अनुकूल होने के लिए नवाचार करें। ये सत्र इस बात की समझ विकसित करने के लिए आयोजित किए गए थे कि किस प्रकार उभरती प्रौद्योगिकियों को आत्मसात और एकीकृत किया जा सकता है, जिससे सैनिकों को सशक्त बनाया जा सके।

मुलाकात

नई दिल्ली में मंगलवार को पेरिस ओलंपिक में दो कांस्य पदक जीतने वाली निशानेबाज मनु भाकर केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान से मुलाकात की।

फिल्म इमरजेंसी का ट्रेलर आज होगा रिलीज

मुंबई/एजेन्सी

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत की आने वाली फिल्म इमरजेंसी का ट्रेलर 14 अगस्त को रिलीज होगा। ज़ी स्टूडियोज़ और मणिकर्णिका फ़िल्म्स द्वारा निर्मित, 'इमरजेंसी' पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी पर आधारित फिल्म है। इस फिल्म में कंगना, इंदिरा गांधी के किरदार में नजर आयेंगी। कंगना ने इंस्टाग्राम पर फिल्म इमरजेंसी का पोस्टर साझा करते हुए, कैप्शन के साथ ट्रेलर रिलीज़ की तारीख की घोषणा की। उन्होंने लिखा,लोकतांत्रिक भारतीय इतिहास के सबसे काले दौर और सत्ता की लालसा को देखें जिसने देश को लगभग जलाकर राख कर दिया!इमरजेंसी का ट्रेलर 14 अगस्त को रिलीज़ होगा।भारतीय लोकतंत्र के सबसे काले अध्याय की विस्फोटक गाथा इमरजेंसी 06 सितंबर को दुनिया भर के सिनेमाघरों में दिखाई जाएगी।

फिल्म 'इमरजेंसी' में कंगना के अलावा अनुपम खेर, महिमा चौधरी, मिलिंद सोमन, श्रेयस तलपड़े, विशाक नायर और दिवंगत सतीश कौशिक भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं।फ़िल्म इमरजेंसी का संगीत संचित बलहारा ने तैयार किया है, जबकि पटकथा और संवाद रितेश शाह ने लिखे हैं।

तिरुमाला मंदिर में जान्हवी कपूर ने टेका मत्था

मुंबई/एजेन्सी

श्रीदेवी की जयंती पर उनकी बेटी और एक्ट्रेस जान्हवी कपूर तिरुमाला पहुंचीं। उनके बॉयफ्रेंड शिखर पहाड़िया भी साथ दिखे। दोनों ने यहां श्री वेंकटेश्वर स्वामी का आशीर्वाद लिया। जान्हवी साउथ इंडियन लुक में नजर आईं। उन्होंने ग्रीन कलर के ब्लाउज के साथ पीली रंग की साड़ी पहनी थी। वहीं कानों में झुमके, नेकलेस और कमरबंद उनके लुक में चार चांद लगा रहा था।

उन्होंने लुक को पूरा करने के लिए बालों का जुड़ा बनाया था। वहीं शिखर सफेद रंग की वेष्टि यानी धोती में दिखे। उन्होंने अंगवस्त्र भी डाल रखा था। शिखर महाराष्ट्र के पूर्व सीएम सुशील कुमार शिंदे के नाती हैं। जान्हवी और शिखर काफी समय से रिलेशनशिप में हैं।

मंदिर में जान्हवी के लिए दर्शन के लिए खास इंतजाम किए गए थे। दर्शन के बाद, टीटीडी (तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम) के अधिकारियों ने उन्हें भगवान वेंकटेश्वर के रंगनायक मंडपम में रेशमी वस्त्र ओढ़ाकर सम्मानित किया और भगवान का प्रसाद दिया। दरअसल, आज उनकी मां और बॉलीवुड की बड़ी अदाकारा श्रीदेवी की 61 वीं जयंती है। जान्हवी हर बार मां के जन्मदिन पर तिरुपति बाला जी दर्शन करने जाती हैं। एक्ट्रेस के वर्कफ्रंट की बात करें तो जान्हवी कपूर सुपरस्टार जूनियर एनटीआर की फिल्म 'देवरा' के जरिए साउथ सिनेमा में कदम रखने जा रही हैं। इस फिल्म से बॉलीवुड एक्टर सैफ अली खान भी इंडस्ट्री में डेब्यू कर रहे है। इसके अलावा, वह सस्पेंस-थ्रिलर 'उलझ' को लेकर भी चर्चाओं में है, जिसको दर्शकों से जबरदस्त रिस्पॉन्स मिल रहा है।

ऑस्ट्रेलियाई संसद में भाषण देंगे रानी मुखर्जी

मुंबई/एजेन्सी

बॉलीवुड अभिनेत्री रानी मुखर्जी और फिल्मकार करण जौहर 13 अगस्त को इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न के आयोजन से पहले ऑस्ट्रेलियाई संसद में भाषण देंगे। फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न की शुरुआत 15 अगस्त से होगी, जो 25 अगस्त तक चलेगा। वहीं इस फेस्टिवल के शुरूआत से दो दिन पहले यानी 13 अगस्त को रानी मुखर्जी और करण जौहर भाषण देंगे।

करण जौहर ने कहा, ऑस्ट्रेलियाई संसद भवन में बोलने के लिए आमंत्रित किए जाने पर मैं बेहद सम्मानित महसूस कर रहा हूं। मैं इस ऐतिहासिक कार्यक्रम का हिस्सा बनकर आ ैर भारतीय सिनेमा की अविश्वसनीय यात्रा का जश्न मनाकर रोमांचित हूं। यह देखना अविश्वसनीय है कि एक उद्योग के रूप में हम जो कहानियां बनाते हैं वे कितनी दूर तक यात्रा करती हैं और यह क्षण भारतीय सिनेमा के सांस्कृतिक प्रभाव के बढ़ते प्रभाव का एक प्रमाण है।

रानी मुखर्जी का कहना कि उन्हें ऑस्ट्रेलिया की संसद में भारतीय फिल्म बिरादरी का प्रतिनिधित्व करने पर गर्व हैं। रानी ने इसे मील का पत्थर बताते हुए कहा कि सिनेमा के जरिए भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बढ़ते सांस्कृतिक संबंधों पर बातचीत करना उनके लिए सम्मानजनक बात होगी।

मेरी असली ताकत एक्टिंग में नहीं, बल्कि कहानियां कहने में है : सलीम खान

मुंबई/एजेन्सी

हिंदी इंडस्ट्री की ब्लॉकबस्टर जोड़ी सलीम खान और जावेद अख्तर, जिन्हें सलीम-जावेद के नाम से भी जाना जाता है, उनकी लाइफ जर्नी पर आधारित डॉक्यूमेंट्री सीरीज 'एंग्री यंग मेन' का मंगलवार को ट्रेलर जारी किया गया। दो मिनट से ज्यादा लंबे इस ट्रेलर में सिनेमा जगत की मशहूर हस्तियां दिखाई गई हैं। इनमें आमिर खान, ऋतिक रोशन, सलमान खान, फरहान अख्तर, शत्रुघ्न सिन्हा, शबाना आजमी, अमिताभ बच्चन, जया बच्चन, हेमा मालिनी, हेलेन और करीना कपूर खान जैसे नाम शामिल हैं। ट्रेलर में दिखाया गया कि सलीम-जावेद ने अपने करियर में किन-किन चुनौतियों का सामना किया। दोनों के संघर्ष को विस्तार से दिखाया गया है।

सलीम खान ने कहा कि मैंने अपने करियर की शुरुआत कैमरे के सामने की, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि मेरी असली ताकत कहानियां सुनाने में है। तभी मैंने उस चीज पर फोकस करना शुरू कर दिया और लिखने लगा। जावेद अख्तर से अपनी मुलाक़ात को याद करते हुए उन्होंने कहा, ''फिर मैं जावेद से मिला, उनमें भी लिखने की कला शानदार थी। साथ में हमने कुछ बेहतरीन काम किए, जिस पर मुझे बहुत गर्व है। हमने बड़ी सफलता हासिल की और इस दौरान इंडस्ट्री के मानदंडों को भी चुनौती दी। उन्होंने कहा कि उन्हें खुशी है कि इस जर्नी पर आने वाली जनरेशन के लिए डॉक्यूमेंट्री बन रही है। उम्मीद है कि वे अपना बेस्ट करने के लिए प्रेरित होंगे और समाज से ऊपर उठकर अपनी पहचान बनाएंगे।

जावेद अख्तर ने कहा, जब मैं इस शहर में आया, तब मेरे पास कोई जॉब, कॉन्टैक्ट या पैसा नहीं था। मैं अक्सर भूखे पेट सो जाता था। मैं हमेशा से यकीन था कि मेरी जीवन कहानी एक दिन जरूर बदलेगी।'' उन्होंने कहा, हमारी फैमिली, दोस्तों और इंडस्ट्री से हमारी जर्नी को डॉक्यूमेंट करने में जो समर्थन मिला है, वह उत्साहजनक है और मैं उन सभी को उनके प्यार के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। डॉक्यू-सीरीज के ट्रेलर में उनके आइकोनिक करेक्टर्स और उनकी मशहूर फिल्में जैसे 'दीवार', 'डॉन', 'शोले', 'त्रिशूल' और 'दोस्ताना' को दिखाया गया है। 'एंग्री यंग मेन' की निर्देशक नम्रता राव ने कहा कि सलीम-जावेद पर इस डॉक्यू सीरीज का निर्देशन करना एक बेहतरीन अनुभव रहा। सलीम और जावेद साहब के साथ बातचीत ने मुझे फिल्म राइटिंग, लाइफ और एक कलाकार के सामने आने वाली बाधाओं से निपटने के बारे में बहुत कुछ सिखाया है। वे स्पष्टवादी, मजाकिया और मुखर कहानीकार हैं। सलीम-जावेद पर आधारित यह सीरीज 20 अगस्त को प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम होगी।

फिल्म 'सेक्टर 36' नेटफ्लिक्स पर होगी रिलीज

मुंबई/एजेन्सी

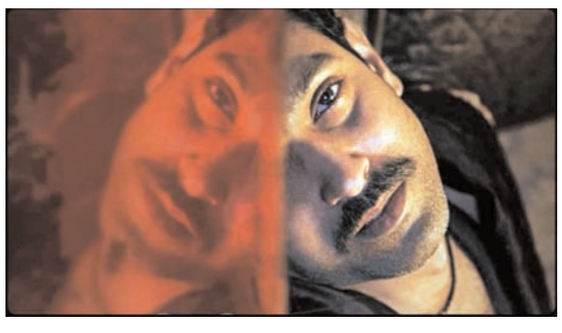

बॉलीवुड अभिनेता विक्रांत मैसी और दीपक डोबरियाल की फिल्म 'सेक्टर 36' ,13 सितंबर को नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। दिनेश विजन की मैडॉक फिल्म्स और जियो स्टूडियो द्वारा निर्मित क्राइम थ्रिलर सेक्टर 36, में विक्रांत मैसी और दीपक डोबरियाल की मुख्य भूमिका है।सच्ची घटनाओं से प्रेरित, सेक्टर 36 झुग्गी बस्ती से कई बच्चों के लापता होने की कहानी है।मेकर्स ने फिल्म सेक्टर 36 का नया पोस्टर साथ करते हुए इसकी रिलीज डेट का खुलासा कर दिया है। फिल्म का पोस्ट शेयर करते हुए इसके कैप्शन में लिखा गया है कि अस्पष्टीकृत गायबियां, एक घातक पीछा और काला सच। अविश्वसनीय विक्रांत मैसी और दीपक डोबरियाल इस खौफनाक क्राइम-थ्रिलर में अभिनय करते हैं, जो सच्ची घटनाओं से प्रेरित है। दिनेश विजान द्वारा निर्मित और आदित्य निंबालकर द्वारा निर्देशित फिल्म सेक्टर 36 ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर 13 सितंबर को रिलीज होगी।निर्माता दिनेश विजन ने कहा, 'हम नेटफ्लिक्स के साथ फिर से काम करने और सेक्टर 36 जैसी कहानी पर काम करने के लिए उत्साहित हैं, जो बेहद संवेदनशील फिल्म है।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
www.dakshinbharat.com
epaper.dakshinbharat.com

चेन्नई | बुधवार | 14-08-2024 /dakshinbharat /dakshinbharat DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT HINDI DAILY

RNI No. : TNHIN/2013/52520
Regn No. : TN/CCN/613/2014-2016
posted at Patrika Channel,
Egmore RMS, Chennai-8

थोड़ी-सी भिन्नता के कारण व्यक्ति के मन में विचार बदलते हैं। अलग-अलग ज्ञान, दर्शन देखते हैं तो मन ऊपर-नीचे हो जाता है। व्यक्ति सत्य से विमुख हो जाता है। सत्य यानी जो शाश्वत, स्थायी हो, हमेशा आपके साथ चलता रहे। ऐसे सत्य का दर्शन कराने वाले, उसे जोड़कर रखने वाले परमात्मा का दर्शन है। वहां भी हमारा मिथ्यात्व शुरू हो जाता है। मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उपशम भी होता है। उपशम यानी हमारे कर्मों को दबा देना। जैसे पानी में फिटकरी डालने से उसमें रही हुई गंदगी नीचे जमा हो जाती है और पानी शुद्ध हो जाता है।

उपशम के माध्यम से अंदर की वेदना को शांत किया जा सकता है : युवाचार्य महेंद्र ऋषि

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। एमकेएम जैन मेमोरियल सेंटर में चातुर्मासार्थ विराजित श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी ने मंगलवार को प्रवचन में कहा कि थोड़ी-सी भिन्नता के कारण व्यक्ति के मन में विचार बदलते हैं। अलग-अलग ज्ञान, दर्शन देखते हैं तो मन ऊपर-नीचे हो जाता है। व्यक्ति सत्य से विमुख हो जाता है। सत्य यानी जो शाश्वत, स्थायी हो, हमेशा आपके साथ चलता रहे। ऐसे सत्य का दर्शन कराने वाले, उसे जोड़कर रखने वाले परमात्मा का दर्शन है। वहां भी हमारा मिथ्यात्व शुरू हो जाता है। मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उपशम भी होता है। उपशम यानी हमारे कर्मों को दबा देना। जैसे पानी में फिटकरी डालने से उसमें रही हुई गंदगी नीचे जमा हो जाती है और पानी शुद्ध हो जाता है। वैसे ही वह एक तरह से मोहनीय कर्म का उपशम हो जाता, दर्शन का स्वरूप प्रकट हो जाता है। कर्मों के दबने को उपशम और उससे उत्पन्न जीव के शुद्ध परिणामों को औपशामिक भाव कहते हैं।

युवाचार्य ने कहा उपशम और क्षयोपशम में पहले उपशम को रखा गया है क्योंकि उपशम साधना की शुरुआत है, क्षयोपशम बाद में आएगा।

उन्होंने कहा जीवन में कोई प्रसंग में पहले उपशम का ध्यान दें। यह हमारी साधना में आगे बढ़ने का उपाय है। गुणस्थान की अपेक्षा से चौथे गुणस्थान से 11वें गुणस्थान (उपशांत मोहनीय) तक काम आता है। जीवन में बहुत ऊंचे पद तक ले जा सकते हैं। महापुरुषों के जीवन में भी कठिनाइयां आती है लेकिन उन्होंने उपशम के माध्यम से अंदर की वेदना को शांत किया। उपशम सम्यक्त्व प्रारंभ है और यदि वह सही हो गया तो क्षयोपशम में प्रवेश कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि जीवन की साधना में उस जगह तक पहुंचना है तो पहले यथाप्रवृत्ति, फिर अनिवृत्ति द्वारा बिना रुके आगे बढ़ते रहना। इसके बाद पुरुषार्थ आएगा।उन्होंने कहा कोई भी चीज को क्रम से सीखनी चाहिए। हम यदि कोई कार्य प्रोसेस से करते हैं तो उसमें आनंद की अनुभूति होती है। हमारे शास्त्रों में उल्लेख आता है कि थोड़े समय के लिए भी सम्यक्त्व आ जाता है तो जन्म मरण से मुक्ति मिल सकती है। उन्होंने कहा तपस्या कभी भी हमारे शरीर को बीमार नहीं कर सकती। चर्या को सुचारू रूप से न रखें, तो बात अलग है। उन्होंने कहा तपस्या दवा की तरह है, पारणा परहेज की तरह है। साधना में आगे बढ़ने के लिए उपशम बहुत महत्वपूर्ण है। विकल्पों में उलझकर हमारी श्रद्धा कम न हो। परमात्मा के वचनों को लेकर जीवन में आगे बढ़े। इस दौरान आरक्कोणम के उत्तमचंद सुराणा व चैन्नै के पूजा गेलड़ा ने 11 उपवास के प्रत्याख्यान लिए। वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ तमिलनाडु की ओर से तपस्यार्थियों का एवं आरकोनम श्री संघ का बहुमान किया गया। मंगलवार को नवकार मंत्र जप व अन्नदान के लाभार्थी भीकमचंद पदमचंद लुंकड़ परिवार थे।

ड्रग मुक्त तमिलनाडु जागरूकता अभियान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां के श्री चंद्र प्रभु जैन कॉलेज ने 12 अगस्त को अरिहंत कॉन्फ्रेंस हॉल में एंटी-ड्रग क्लब ड्रग मुक्त तमिलनाडु जागरूकता अभियान का आयोजन किया। एंटी-ड्रग, एनसीसी, एनएसएस और करुणा क्लब इकाइयों, डॉ. जी.पी. भवानी ने क्लब समन्वयकों के साथ कार्यक्रम की अध्यक्षता की। एससीपी जैन कॉलेज के 350 से अधिक छात्रों ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया।

कार्यक्रम का समापन आर. मुरलीधरन, एनएसएस समन्वयक और लेफ्टिनेंट एएन. थिरुनेल्लई, एएनओ, एंटी-ड्रग क्लब के सहायक समन्वयक के नेतृत्व में नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ शपथ तमिल और अंग्रेजी दोनों भाषा के साथ हुआ।

करुणा क्लब समन्वयक आर.गीता द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

बेंच और टेबल की भेंट

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोयंबटूर। श्री सुपार्श्वनाथ भक्ति मंडल के द्वारा स्थानीय शारदा हिंदू विद्यालय में विद्यार्थियों के शैक्षणिक उद्दारार्थ पठन पाठन में सुविधा व सुगमता के लिए बेंच और टेबल प्रदान किया गया।

संघ की सदस्याओं चंद्रा पोरवाल, कविता छाजेड, साधना बाफना, सुनीता बंबोली, नंदा कोठारी, शिल्पा भंडारी और मनीषा छाजेड़ आदि की समुपस्थिति में विद्यालय की प्राचार्य और अध्यापक अध्यापिकाओं को करीब एक लाख रुपए मूल्य की सामग्री प्रदान की गई।

मंडल की सदस्याओं ने विद्यालय के सर्वांगीण विकास में भविष्य में भी सहयोग की घोषणा की। विद्यालय की प्रधान अध्यापिका सेलिन सेसिलिया ने धन्यवाद दिया।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह जारी करेंगे करुणानिधि पर 100 रुपए का स्मारक सिक्का

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री और द्रमुक प्रमुख एम. करुणानिधि की जन्म शताब्दी पर भारत सरकार 100 रुपए का स्मारक सिक्का जारी करने जा रही है। 18 अगस्त को चेन्नई में आयोजित एक कार्यक्रम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह इस 100 रुपए के सिक्के का अनावरण करेंगे। सिक्कों के जानकार सुधीर लूणावत के अनुसार करुणानिधि की जन्म शताब्दी पर जारी होने वाले 100 रुपए के सिक्के को भारत सरकार की हैदराबाद टकसाल में 50 प्रतिशत चांदी, 40 प्रतिशत तांबा, 5 प्रतिशत निकल व 5 प्रतिशत निकल के मिश्रण से बनाया गया है।

सुधीर के अनुसार इससे पहले भी तमिलनाडु के तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों के .कामराज ,पेरारिग्नर अन्ना और एम.जी रामचंद्रन की की स्मृति में भी 100 रुपए के स्मारक सिक्के जारी हो चुके हैं। यह सिक्का कभी प्रचलन में नही आएगा। अनावरण के पश्चात भारत सरकार की हैदराबाद टकसाल द्वारा इसे प्रीमियम कीमत पर बिक्री किया जाएगा।

महात्मा श्रीईसरदासजी महाराज की जयंती मनाई गई

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां श्री तमिलनाडु चारण समाज चेन्नई एवम् श्री अखिल भारतीय चारण-गढ़वी महासभा तमिलनाडु द्वारा महात्मा श्रीईसरदास जी की जयंती बड़े हर्षोउल्लास के साथ मनाई गयी। कार्यक्रम साहूकारपेट स्थित रामदेव भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में महात्मा ईसरदासजी महाराज को दीप प्रज्ज्वलित कर माला एवं फूल पुष्प अर्पित कर महात्मा ईसरदास जी का पूजन किया गया। इस अवसर पर महात्मा ईश्वरदासजी महाराज द्वारा रचित देवियाँण का सामूहिक पाठ राजस्थान के देशनोक से आए महंत डॉ करणी प्रतापजी करवाया व उसकी व्याख्या की।

इस अवसर पर भजनप्रवाहक़ किन्नू बन्ना ने मधुर करणी माताजी एवं सोनल माताजी की चिरजा एवं छन्द प्रस्तुत किये व भक्तों ने महात्माजी एवं भगवती के चरित्र सुनकर आनंद का अनुभव किया।

महंतश्री ने देवी उपासना की महत्त्व को बताते हुए, महात्मा ईसरदास जी के जीवन परिचय के साथ, उनकी भक्ति की शक्ति बारे में बताया। चारण जाती तो सदैव से शिव के गण एवं देवी के उपासक रहे है, और शक्ति उपासना को जानने और बताने वाले रहे है। महंत करणी प्रताप ने दुर्गा सप्तशती के सिद्ध मंत्रों का भी उच्चारण भक्तों से करवाया। सुरेन्द्र चारण सिणधरी ने बताया कि इस अवसर पर श्रीअखिल भारतीय चारण-गढवी महासभा अध्यक्ष हिंगलाजदान चारण आकली, श्रीतमिलनाडु चारण समाज चैन्नई के अध्यक्ष गोरूदान सान्दु, सचिव लक्ष्मणदान लाखावत,सहसचिव धनेशसिंह, कस्टम अप्रेजर अरविन्द कुमार मेहडु, वायुसैनिक हिंगलाजदान खिडिया, करणसिंह लाखावत, मदनदान सुरताणिया, लक्ष्मणदान कड़वा, चैतनदान लालस, मुळदान, हनुमान दान सामौर सहित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

वार्शी में विराजित श्रमण संघीय सलाहकार उपप्रवर्तक डॉ. राम मुनिजी म.सा. से मुलाकात करते हुए पदाधिकारी

जैन कांफ्रेंस के पदाधिकारियों ने लिए गुरु दर्शन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोयम्बटूर। रविवार को श्री आल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के कोयंबटूर, इरोड, सेलम, तिरुपुर, ऊटी एवं संपूर्ण केरल प्रदेश के अध्यक्ष विजयराज लोढ़ा, महामंत्री राजेश कुमार गादिया, सह मंत्री ज्ञानचंद खारीवाल व कार्यकारिणी सदस्य मदनलाल जैन ने मुंबई में चातुर्मासार्थ विराजित भाव्यात्माओ के दर्शन वंदन के लाभ लेकर गतिमान चातुर्मास की सुख साता पूछी।

सर्वप्रथम ठाणे जिले स्थित श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ(पनवेल) में विराजित श्रमण संघीय उप प्रवर्तक श्री अरुण मुनि जी म सा एवं श्री सुरेश मुनि जी म सा के दर्शन, वंदन के लाभ लेकर मांगलिक श्रवण किया। इसके बाद वाशी स्थित श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ में चातुर्मासार्थ विराजित श्रमण संघीय सलाहकार,उप प्रवर्तक डॉ. श्री राम मुनि जी म सा निर्भय एवं युवा मनीषी श्री विकास मुनि जी म सा शास्त्री के दर्शन लाभ लिए।

श्री राम मुनि जी सन् 1998 में कोयंबटूर पदार्पण की यादें ताजा की। दोनों ही संत वृंद मंडल ने दक्षिण की जानकारी ली।

यह शरीर नश्वर हैं, आत्मा ही शास्वत है : साध्वी राजमती

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां के उपनगर साहूकारपेट स्थित जैन भवन में अपने प्रवचन में साध्वीश्री राजमतीजी म. सा. ने कहा कि विनयशील व्यक्ति का ही हमेशा आदर होता है और वही दान कर सकता है। पशु और मानव में अन्तर बताते हुए उन्होंने कहा कि मानव बुद्धिमान होने के बावजूद नश्वर वस्तुओं जैसे मकान, पूंजी आदि भौतिक सुखों को अपना समझता है, जबकि वो अंतिम समय में अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सकता है। उन्होंने कहा कि दुनिया में भले ही रिश्वत या पैसे से काम हो सकता है, लेकिन भगवान के घर में न तो रिश्वत से काम हो सकता है और न ही अन्य किसी तरीके से। वहां तो केवल मनुष्य के पुण्य ही काम आते हैं। साध्वीश्री ने कहा कि मानव को अपनी माता के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहना चाहिए, क्योंकि उनके कारण ही हमें मनुष्य भव प्राप्त हुआ हैं। उन्होंने कहा कि दान, शील, तप और उत्कृष्ट भावना से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। इससे पूर्व साध्वी विनयश्रीजी म. सा. ने दान का महत्व बताते हुए कहा कि दान से मनुष्य के पापों का क्षय होता हैं और दान देते समय उत्कृष्ट भावना रखनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि दिखावे के लिए दान से कर्मो का क्षय नही हो सकता है। संघ के अध्यक्ष प्रकाश चन्द खिवसरा ने बताया कि स्वतंत्रता दिवस और रक्षाबंधन का कार्यक्रम 15 अगस्त को जैन भवन के प्रांगण में आयोजित किया जाएगा। धर्मसभा का संचालन संघ के महासचिव संजय पिन्चा ने किया।

फूशाराम मूंधड़ा कैरम प्रीमियम लीग सम्पन्न

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां श्री माहेश्वरी स्पोर्ट्स क्लब द्वारा 11 अगस्त को फूशाराम मूंधड़ा कैरम प्रीमियर लीग सम्पन हुआ। अध्यक्ष किशन झवर ने बताया कि स्पोर्ट्स क्लब के 56 वर्षो के इतिहास में इतना बढ़िया आयोजन पहली बार हुआ। पूरा का पूरा आयोजन मेला जैसा लग रहा था। सुबह अध्यक्ष द्वारा प्रायोजकों का स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। 6 टीमों के मालिकों का भी स्वागत हुआ। समाज के वरिष्ठ प्रमोद मालपानी, सत्यनारायण भूतड़ा, जेठमल चांडक सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

खेल के चेयरमैन अरुण डागा ने बताया कि लीग पूरी तरह से प्रोफेशनल रूप से खेली जाएगी, रेफरी वगैरह सब तजुर्बे वाले बाहर से आए थे। समन्वयक चंद्रकुमार टावरी ने लीग के नियमों के बारे में बताया। पिछले 2 महीनों से तैयारी में लगे आलोक बिसानी ने जानकारी देते हुए की इस लीग का ऑक्शन 15 दिन पहले करवा चुके है जिसमे 6 टीमों के 54 खिलाड़ी भाग ले रहे है। सब टीमें लगातार अच्छा प्रदर्शन करती रही। विजेता अनुराग माहेश्वरी की कम्फर्ट स्ट्राइकर रही वहीं उपविजेता कृष्णकुमार मूंधड़ा की टीम सीएमसीसी रही। संचालन की जिम्मेदारी अनिल दलाल ने संभाली।

रक्षा प्रदर्शनी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

कोयम्बटूर के सुलूर में रक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय रक्षा प्रदर्शनी : यह तरंगशक्ति का तीन दिवसीय आयोजन किया गया। पहले चरण में 30 देशों के साथ विभिन्न देशों के 150 विमान भाग ले रहे हैं।

जीवन में शुद्ध अध्यात्म भाव रखना चाहिए : विनयमुनि

बेंगलूरु। शहर के गणेश बाग में चातुर्मासार्थ विराजित शिविराचार्य विनयमुनिजी खींचन ने आवश्यक सूत्र की विवेचना करते हुए कहा कि जागृति की कमी से वर्तमान जीवन शैली में साधनों की प्रचुरता बढ़ने से अनर्थ दण्ड नामक दोष (पाप) बहुत ही अति मात्रा में बढ़ता जा रहा है।

पावरग्रिड POWERGRID
(A Government of India Enterprise)

विज्ञापन संख्या: CC /05/2024 दिनांक: 07.08.2024

पावरग्रिड, भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय के अधीन एक महारत्न सार्वजनिक उपक्रम और दुनिया की सबसे बड़ी ट्रांसमिशन यूटिलिटीज में से एक, तेज अनुभवी और प्रतिभाशाली पेशेवरों को अपने साथ जुड़ने के लिए आमंत्रित करते हैं।

जूनियर इंजीनियर (सर्वे इंजीनियरिंग) / सर्वेक्षक / ड्राफ्ट्समैन

पात्रता मानदंड और चयन प्रक्रिया के बारे में विवरण के लिए https://www.powergrid.in पर करियर अनुभाग पर जाएं।

पावरग्रिड में ऑनलाइन आवेदन जमा करने की शुरुआत	07.08.2024 (17:00 बजे)
पावरग्रिड में ऑनलाइन आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि	29.08.2024 (23:59 बजे)

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006.
Regn No. RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520 **Editor : Bhupendra Kumar** (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar.
Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.